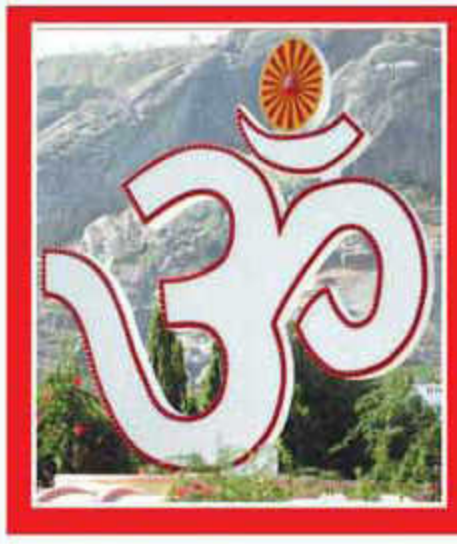

शिव आमंत्रण

वर्ष: 01 अंक: 03

विशेष सेवाओं हेतु

समाज में अराजकता का कारण स्वयं को भूलना... राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, पेज 2

आत्मा के तीनों कालों की कहानी... पेज 2 पर

मनुष्यात्मा पशु योनि में जन्म नहीं लेती... पेज 3 पर

सभी धर्मों का मूल मंत्र शांति... स्वामी चक्रपाणि, अध्यक्ष, हिन्दू महासभा, नई दिल्ली... पेज 3

परमात्मा की सत्य पहचान... पेज 4 पर

ब्रह्माकुमारीज़ व्यावहारिकता की बात करती हैं.. प्रदीप जैन आदित्य, केंद्रीय राज्यमंत्री, ग्राम विकास मंत्रालय, नई दिल्ली.. पेज 4 पर

सुलझाइए खुद की पहेली, मैं कौन?

आज विज्ञान के युग में मनुष्य ने दुनिया के कठिन से कठिन चीजों का अविष्कार किया है। कई ऐसी खोज की है जिसके बारे में कल्पना नहीं की जा सकती थी आज वह साकार रूप में हमारे सामने फल फूल रही है। पूरे विश्व में फैली मनुष्यात्माओं का सही परिचय क्या है। आखिर हम कहां से आते और कहां जाते है, हमारा मूल स्वधर्म क्या है। यह यक्ष प्रश्न आज तक अबूझ पहेली बना हुआ है। इस भूल का खामियाजा विघटित होती हमारी सामाजिक व्यवस्था और हमारे सम्बन्धों के विखराव के रूप में मिल रहा है। आखिर हम है कौन? इसी पर प्रस्तुत है आत्मा का विश्लेषण-

आखिर हम कौन हैं?

मनुष्य अपने जीवन में कई पहेलियां हल करता है और उसके लिए इनाम भी पाता है। आज मनुष्य के पास दुनियाभर का ज्ञान एवं जानकारी है, लेकिन ताज्जुब की बात है कि उसे स्वयं का ज्ञान नहीं है। इस छोटी-सी पहेली का हल कोई नहीं जानता कि मैं कौन हूं...? यूं तो हर एक मनुष्य सारा दिन मैं-मैं कहता रहता है, परंतु यदि उससे पूछा जाए कि मैं कहने वाला कौन है? तो वह कहेगा कि कृष्णचंद हूं या मैं लालचंद हूं।

वास्तव में यह शरीर का नाम है, शरीर तो मेरा है, मैं तो शरीर से अलग हूं। मैं शरीर को चलाने वाली ज्योतिबिन्दु स्वरूप, शरीर में भृकुटि के मध्य विराजमान एक चमकता हुआ सितारा आत्मा हूं। शरीर तो आत्मा का कर्म करने का साधन मात्र है। आत्मा ही शरीर की कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करती है और शरीर द्वारा किए हुए कर्म का सुख-दुख भोगती है।

हम इस शरीर से जो भी कर्म करते है उन कर्मों के आधार पर ही हमारे संस्कार बन जाते है और इन्हीं संस्कारों के आधार पर ही व्यक्ति का व्यक्तित्व बनता है। इस छोटी-सी पहेली का प्रैक्टीकल हल न जानने के कारण अर्थात् स्वयं को न जानने के कारण, आज सभी मनुष्य देह-अभिमान के चलते काम, क्रोधादि विकारों के वश हैं, जो सर्व दु:खों का कारण है।

स्वयं को भूल चुका है इंसान

स्वयं को भूलने के कारण आज मनुष्य देह अभिमान के वशीभूत होकर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के आधार पर कर्म करते हैं। इसी के चलते आज दुनिया की यह हालत हो गई है कि भाई-भाई का दुश्मन बन बैठा है। विकारों की अग्नि में जलता हुआ मनुष्य आज सुख की कामना के लिए प्रभु को पुकार रहा है कि हे! भगवान इस धरती पर आओ और हमें इस दुख की दुनिया से मुक्ति दिलाओ।

इस पतित दुनिया को पावन बनाने एवं मनुष्यमात्र को दुखों से मुक्त करने स्वयं परमपिता परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होकर मानव को मुक्ति एवं जीवन मुक्ति का रास्ता बताते है। परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है और वह साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर राजयोग की शिक्षा दे रहे है।

आत्मा करती है शरीर का कंट्रोल

शरीर मोटर के समान है तथा आत्मा इसका ड्राइवर है अर्थात् जैसे ड्राइवर मोटर का नियंत्रण करता है। उसी प्रकार आत्मा शरीर का नियंत्रण करती है। आत्मा के बिना शरीर निष्प्राण है। जैसे ड्राइवर के बिना मोटर। अत: परमपिता परमात्मा कहते हैं कि अपने आपको पहचानने से ही मनुष्य इस शरीर रूपी मोटर को चला सकता है और अपने लक्ष्य पर पहुंच सकता है।

अन्यथा जैसे ड्राइवर कार चलाने में निपुण न होने के कारण दुर्घटना का शिकार बन जाता है और कार एवं उसके यात्रियों को भी चोट लगती है। इसी प्रकार जिस मनुष्य को अपनी पहचान नहीं है वह स्वयं तो दु:खी और अशांत होता ही है, साथ में अपने सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले मित्र-सम्बन्धियों को भी दु:खी व अशांत बना देता है।

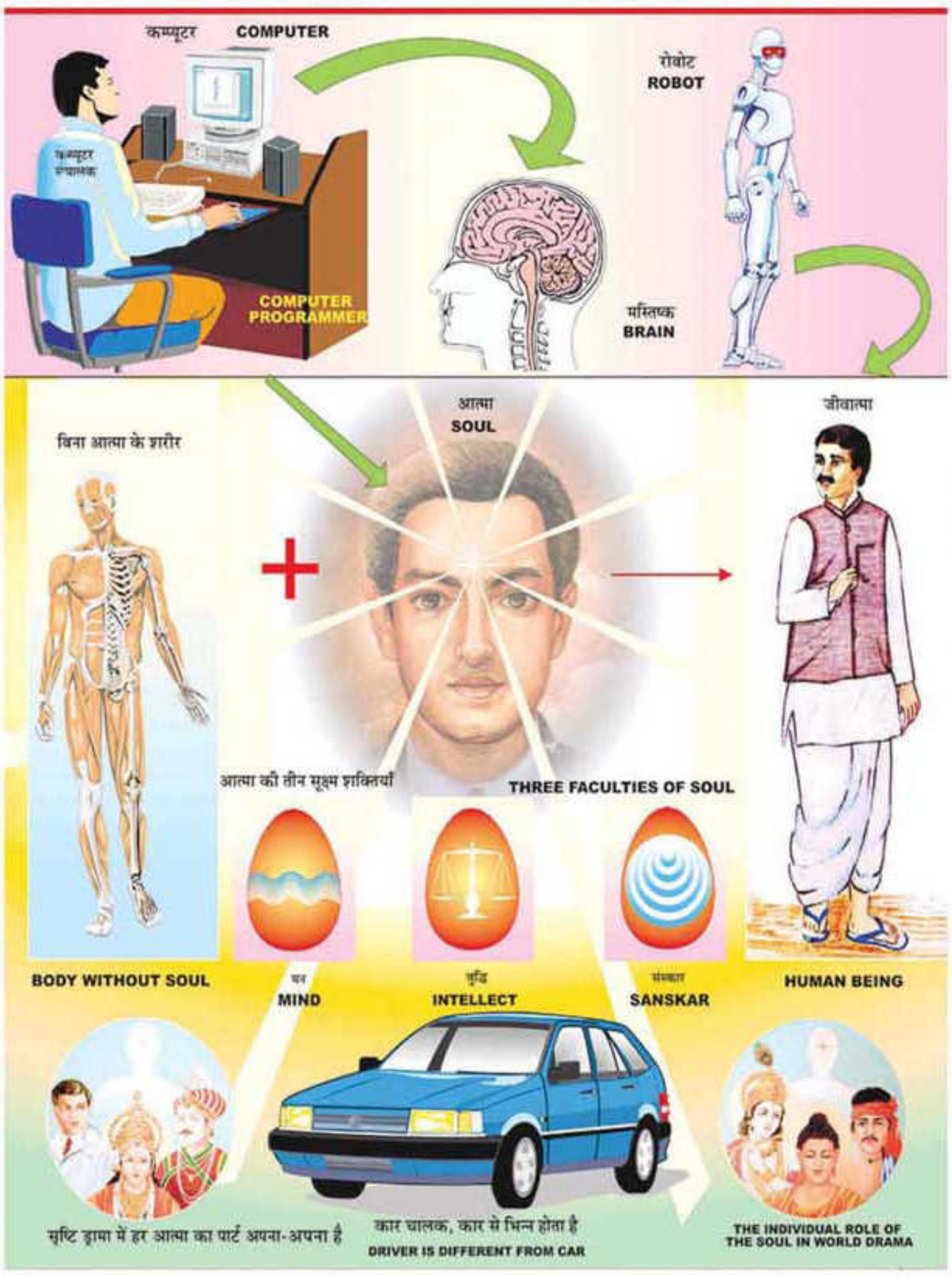

आत्मा का कोई शारीरिक आकार नहीं होता

आत्मा शरीर से भिन्न एक विचारशील और अनुभवशील, अनादि-अविनाशी सत्ता है। आत्मा ज्योतिस्वरूप है और सूक्ष्मातिसूक्ष्म है। जैसे आकाश में चमकता हुआ तारा हमें एक प्रकाशमान बिन्दु सा दिखाई पड़ता है वैसे ही आत्मा भी ज्योति-बिन्दु समान है। यह मनुष्य के भृकुटी में निवास करती है, जहां पर कि भक्त लोग टीका लगाते हैं अथवा माताएं बिन्दी लगाती है।

आत्मा का मस्तिष्क में वास होने के कारण ही कहा भी जाता है कि भृकुटी में चमकता है एक अजब सितारा...गरीबां नूं साहिबा लगदा ए प्यारा। इसी कारण से मनुष्य जब भी अपने भाग्य के बारे में सोचता है तो वह यहीं पर हाथ रखता है। आत्मा को न जानने के कारण ही भेदभाव, लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं।

विचारों के आधार से होती आत्मा की पहचान

जिस मनुष्यात्मा के जैसे विचार एवं कर्म होते है उसी के आधार पर उसकी पहचान होती है। जिस आत्मा में इच्छा, विचार, प्रयत्न और अनुभव शुद्ध अथवा सात्विक हो वह महात्मा, पुण्यात्मा, देवात्मा या पावन आत्मा कहलाता है। जिसमें यह अशुद्ध अथवा तामसिक हो वह पापात्मा, दुरात्मा या पतित आत्मा कहलाता है। आत्मा के अच्छे या बुरे गुण होने के कारण ही कहा जाता है कि आत्मा अपना मित्र एवं शत्रु स्वयं है।

आत्मा के भान से जागृत होती है शक्तियां

मनुष्य को सबसे पहले खुद का परिचय जान लेना चाहिए। इससे ही वह समाज में अपनी स्थिति को स्पष्ट कर पाएगा। बाबा ने सबसे पहले हमें आत्मा का पाठ पढ़ाया और उससे ही हम यह समझ पाए कि हमारे पास क्या-क्या शक्तियां है। आत्मा के पाठ से ही हम अपने वास्तविक स्वरूप, गुण को समझ पाते है। आत्मा के अभ्यास से हमारे देखने के दृष्टिकोण में बदलाव आ जाता है। इसके साथ ही आत्मा का सम्बन्ध धीरे-धीरे परमात्मा से जुड़ जाता है। परमात्मा से मिलने का यही एक तरीका भी है। जिसके द्वारा ही हम परमात्मा के समीप पहुंच सकते है। जितना-जितना हम अपने स्वरूप अर्थात् आत्मा को समझने का प्रयास करते है उतना ही हमारी शक्तियां भी विकसित होने लगती है। यही एक रास्ता है जब हम पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरो सकते है, क्योंकि पूरी दुनिया में जितने भी मनुष्य है। सबके अन्दर आत्मा है और आत्मा का पिता परमात्मा है। इसलिए परमात्मा अवतरित होकर सबसे पहले आत्मा का ज्ञान देते है। ताकि मनुष्य को अपनी सही पहचान हो सके।

राजयोगिनी दादी जानकी जी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

आत्मा की पवित्रता का होता निर्माण

यहां आत्मा की पवित्रता एवं सरलता को सहजता से निर्माण किया जाता है। यहां दिए जा रहे आत्मा के ज्ञान को जीवन में धारण कर हम अपना स्वरूप भी परमात्मा जैसा बना सकते हैं।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, अध्यक्ष, विश्व कल्याण परिषद, दिल्ली

आत्मा का विज्ञान इन शक्तियों द्वारा ही आत्मा इस शरीर से कर्म करती है

मन, बुद्धि, संस्कार आत्मा की शक्तियां

जिस तरह मानव शरीर की रचना का अध्ययन करना शरीर विज्ञान कहलाता है। उसी तरह आत्मा का अध्ययन करना आध्यात्मिक विज्ञान, सूक्ष्म विज्ञान या तात्विक विज्ञान कहलाता है। जिस तरह एक एटम, प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन व न्यूट्रॉन से मिलकर बनता है एवं हमारा शरीर पांच तत्वों जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु और आकाश से मिलकर बना है। उसी तरह आत्मा भी मन, बुद्धि और संस्कार के मिलने से बनती है। मन-बुद्धि और संस्कार ये तीनों आत्मा की शक्ति है। इनके द्वारा ही आत्मा इस शरीर द्वारा कर्म करती है।

मन आत्मा की विचार शक्ति

आत्मा की तीनों शक्तियों में मन सबसे शक्तिशाली शक्ति है। मन आत्मा की विचार शक्ति का नाम है। मन रूपी शक्ति के द्वारा ही आत्मा कल्पना करती, सोचती और विचार करती है। विचार-प्रक्रिया ही समस्त इच्छाओं, लालसाओं तथा अनुभूतियों का आधार है। मन की गति के लिए कहा जाता है कि यह प्रकाश और आवाज की गति से भी तीव्र है। मन एक क्षण से भी कम समय में कहीं भी पहुंच सकता है।

सूक्ष्म शक्ति होने के कारण यह समय तथा स्थान की सीमाओं के बंधन से परे है। मन और हृदय में अंतर है, क्योंकि हृदय शरीर का भौतिक अंग है जो रक्त संचरण को बनाए रखने का कार्य करता है। मन आत्मा की शक्ति है।

बुद्धि विचारों को परखती है

बुद्धि आत्मा की दूसरी शक्ति है। हमारे मन में जो भी विचार, संकल्प चलते हैं उन्हें परखने एवं निर्णय करने का काम बुद्धि करती है। बुद्धि आत्मा की तर्क शक्ति और परखने की शक्ति का नाम है। मन में जो विचार चलते है उन्हें पहचानना, समझाना, स्मरण करना, तर्क करना, विश्लेषण करना एवं निर्णय लेना बुद्धि का कार्य है।

बुद्धि और मस्तिष्क में भी अंतर है, क्योंकि मस्तिष्क शरीर के नियंत्रण कक्ष के रूप में है, लेकिन बुद्धि आत्मा की निर्णायक शक्ति है। बुद्धि जो भी निर्णय देती है उसी के अनुसार मनुष्यात्मा कर्म करती है और उसी के अनुसार हमारे संस्कार बनते हैं। संस्कार के आधार पर ही व्यक्तित्व बनता है।

कर्म के आधार से बनते हैं संस्कार

मन में उठे किसी भी विचार का बुद्धि जो भी अच्छा-बुरा निर्णय देती है उसी के अनुसार हमारे कर्म होते हैं। यह कर्म ही आत्मा के संस्कार बन जाते हैं। जिसे आत्मा अपने साथ अगले में ले जाती है। कर्म के आधार पर ही आत्मा उसका फल भोगती है।

इनके आधार पर ही फिर मन में संकल्प उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार यह चक्र चलता ही रहता है। संस्कार ही धारणाओं, अभिरूचियों, संवेगों, भावनाओं, दृष्टिकोणों, स्वभावों, व्यक्तिगत विशेषताओं तथा आदतों का वह समूह है जिस पर आत्मा के विचार आधारित होते हैं। मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व उसके संस्कारों का ही प्रतिबिम्ब होता है।

...कहां है आत्मा का वास्तविक घर ?

आत्मा का वास्तविक घर परमधाम है। इसे शांतिधाम, ब्रह्मलोक, निर्वाणधाम, मोक्षधाम, अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। अत: वहां न सुख है, न दुख है, बल्कि एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म बंधन वाला शरीर नहीं होता है। यहीं सभी मनुष्यात्माएं सूक्ष्मरूप में निवास करती है।

सभी आत्माएं ड्रामानुसार इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अपना पार्ट बजाने आती है और पार्ट पूरा कर वापस परमधाम चली जाती है। यह सृष्टि एक रंगमंच है। जिसमें सभी आत्माएं अपना अभिनय करती है। अब यह हमारे ऊपर है कि हम इस रंगमंच पर कितने अच्छे से अभिनय कर पाते है। जीवन को भार समझकर जीते है या आनंद के साथ। परमधाम हो हम सभी मनुष्यात्माओं के पिता परमपिता शिव परमात्मा का निवास स्थान है।

आत्मा अजर- अमर अविनाशी है

गीता में भी आत्मा के स्वरूप, गुणों एवं शक्तियों की स्पष्ट व्याख्या की गई है

न जायते म्रियते वा कदाचिन नायं भूत्वा भविता वा न भूय:।
अजो नित्य: शाश्वतोयं पुराणों, न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

उक्त श्लोक गीता के दूसरे अध्याय के संख्ययोग में लिखा है अर्थात् आत्मा का न जन्म होता है, न उसकी मृत्यु होती है। वह पहले न थी या अब के बाद नहीं होगी, ऐसा नहीं है। आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत, पुरातन है। शरीर का नाश होने पर भी आत्मा का नाश नहीं होता है। हे अर्जुन! आत्मा को शास्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, पानी भिगों नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती।

आत्मा स्थिर, अचल और सनातन है। जैसे परमात्मा पूरे विश्व का संचालन करते हैं। वैसे आत्मा शरीर का संचालन करती है। जब तक आत्मा और शरीर जुड़े हुए हैं तब तक शरीर जीवंत रहता है। जब आत्मा और शरीर अलग होते हैं तब शरीर की मृत्यु होती है। आत्मा अमर है इसलिए मृत्यु के समय उसका शोक नहीं करना चाहिए।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामे कंशरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच।।

अर्थात् संपूर्ण धर्मों को, सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मों को मुझ में अर्पित कर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण में आ जा। मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा तू शोक मत कर।

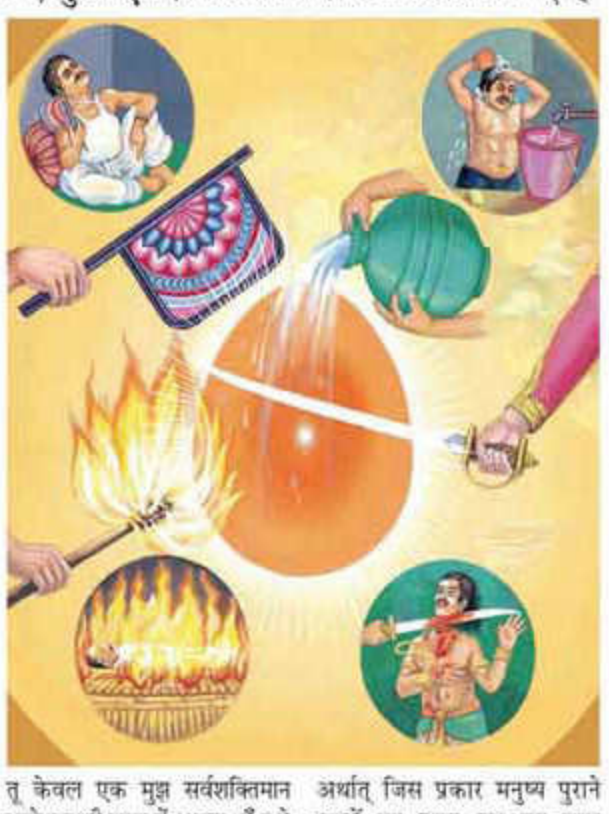

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानी गृह्णाति नरो पराणी। तथा: शरीराणि विहाय जिर्नान्य नियानी संयति नवानी देहि।।

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों का त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है। उसी प्रकार आत्मा पुराने तथा व्यर्थ के शरीरों को त्यागकर नवीन भौतिक शरीर धारण करता है।

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्य:। आश्चर्यवच्चैनमन्य: शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित।।

अर्थात् कोई आत्मा को आश्चर्य से देखता है, कोई इसे आश्चर्य की तरह बताता है तथा कोई इसे आश्चर्य की तरह सुनता है, किन्तु कोई-कोई इसके विषय में सुनकर भी कुछ नहीं समझ पाते।

अत: लोग आत्मा को उसकी संरचना या उसके विवरण के आधार पर ही आश्चर्य से देखते हैं। इन्द्रियतृप्ति की बातों में फंस कर लोग माया से इस तरह मोहित हो जाते हैं कि उनके पास आत्मज्ञान को समझने का अवसर ही नहीं होता।

यद्यपि यह तथ्य है कि आत्म-ज्ञान के बिना सारे कार्यों का दुष्परिणाम जीवन-संघर्ष में पराजय के रूप में सामने आता है यदि कोई किसी तरह से आत्मा के इस विषय को समझ लेता है तो उसका जीवन सफल हो जाता है

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति।।

अर्थात् आत्मा का प्रत्येक कण भौतिक परमाणुओं से भी छोटा है इसका प्रभाव सारे शरीर में उसी तरह व्याप्त है, जिस प्रकार किसी औषधि का प्रभाव शरीर में व्याप्त रहता है। और यही आत्मा के अस्तित्व का प्रमाण है।

संपादकीय

ब्र.कु. करुणा

सर्व समस्याओं के समाधान का केन्द्र स्वयं की पहचान

इस जगत में चौरासी लाख योनियां निवास करती है। जिसमें मनुष्य योनि सबसे सर्वोत्तम मानी गयी है। पूरे विश्व की गतिविधियां और उत्थान-पतन की कहानी इसी के इर्द गिर्द घूमती है। पूरे सृष्टि चक्र में स्थितियां आत्मा के उत्थान और पतन के रूप में विभक्त होती है। जब मनुष्य श्रेष्ठ होता है, तब उसे आत्मिक ज्ञान अर्थात् स्वयं का सही परिचय का ज्ञान होता है। इसलिए आत्मा की आठों शक्तियां सही दिशा में कार्य करती है। इसलिए मनुष्य देवता के रूप में जाना जाता है। हम शरीर के रूप में भले ही अलग-अलग दिखते हैं। परन्तु सभी शरीर के अन्दर निहित आत्मा का एक ही रूप है। इसलिए हम सभी अपने असली रूप में स्थित होने का प्रयास करें। इसका असर हमारी सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक सम्बन्धों तथा आपसी तालमेल में साफ देखने को मिलेगा। क्योंकि जब हम अपने असली स्वरूप अर्थात् आत्मा के रूप में स्थित होने का प्रयास करेंगे तो आत्मा की शक्तियां विकसित हो जाएगी। आज हम केवल स्वयं को शरीर समझते है और उसी रूप में कार्य करते है। इसलिए हमारे चारों ओर अराजकता और असमानता का माहौल बनता है। जबकि आत्मिक रूप में स्थित होने पर सद्भावना का माहौल। आज तक जो महापुरूष हुए है उन्होंने सर्व प्रथम खुद को ही खोजने का प्रयास किया। यही कारण रहा है कि वे एक मार्गदर्शक के रूप में विख्यात हुए हैं। यदि हम गौण होते मानवीय मूल्य पर नजर डाले तो उसका एक प्रमुख कारण जो सामने आता है वह यही कि हम खुद से दूर होते जा रहे है। जो व्यक्ति अपने आप से दूर होगा निश्चित तौर पर दूसरी दुनिया में गुम होता चला जाएगा। वहीं हाल हमारे भी हुए हम अपनी पहचान, विरासत और सही पहचान को छोड़ते हुए दूसरी चीजों से अपनी पहचान प्राप्त करने के चक्कर में दूर होते चले गए। इसके साथ ही मूल्य भी हमसे दूर होते चले गए। क्योंकि मूल्यों को साथ रखने के लिए मूल्यों के स्रोत के साथ भी जुड़ा रहना होगा। यह प्रयास हम सबको मिलकर करना होगा। फिर निश्चित तौर पर दुनिया बदल जाएगी और बदल जाएंगे हम भी। जब तक मनुष्य को स्वयं का एवं परमात्मा का सत्य ज्ञान नहीं होता तब तक वह परमात्म अनुभूति नहीं कर सकता है। आत्म अनुभूति से ही परमात्म अनुभूति संभव है। तो आइए हम भी परमात्मा द्वारा बताए जा रहे अपनी असली स्वरूप को पहचाने और खुद के लिए तथा समाज के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाएं। इस अंक में यही हमारा प्रयास है। ताकि तेरे-मेरे का भाव समाप्त हो और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना विकसित हो। आज संसार में लड़ाई, झगड़ों एवं मानवीय समस्याओं का मूल कारण मानव का स्वयं को भूलना है।

आत्म जागृति के बिना परिवर्तन संभव नहीं

मेरी कलम से

पूनम वर्मा

आत्मा अनुभूति के लिए आत्म-जागृति में रहना आवश्यक है, क्योंकि कई जन्मों से हम देह की जागृति में रहे और दैहिक संस्कार बनने लगे जिससे आत्मा कमजोर बनती गई। जैसे पानी का असली स्वधर्म शीतलता है। यदि उसे गर्म किया जाए तो वह अपना असली स्वरूप खो देता है और गर्म हो जाता है और ठंडक में रखें तो पानी फिर से शीतल हो जाता है। उसी प्रकार आत्मा भी अपनी गलत जागृति से विकृत हो जाती है तथा अपना असली स्वधर्म शांति व पवित्र खो बैठती है।

आत्मा एक अद्भुत अलौकिक दिव्य शक्ति है जो अजर, अमर और अविनाशी है। आत्मा में अनंत शक्तियां छिपी है। यदि इन शक्तियों का अवलोकन मनुष्य करने लगे तो मनचाही सफलताओं के आयाम छू सकता है। लेकिन इस विषय पर बारीकी से गौर करने की आवश्यकता है, तभी मन-इच्छित फल की प्राप्ति संभव है।

आत्मा एक चैतन्य सत्ता है, जिसकी तीन सूक्ष्म शक्तियां हैं- मन, बुद्धि और संस्कार। तीनों शक्तियों का कार्य अलग-अलग है। मन का स्वाभाविक कर्म सोचना है या संकल्प करना है। बुद्धि का कार्य निर्णय करना है और जब बुद्धि द्वारा किसी कार्य को करने की अनुमति मिल जाती है तो व्यक्ति अंततः कर्म को अंजाम देता है और बार-बार किए गए कर्म का संस्कार बन जाता है। इसलिए यदि हम अपने संस्कारों को बदलना चाहते हैं तो हमें पहली कर्मेन्द्री मन पर ध्यान देना अति आवश्यक है। जैसे-जैसे हम संकल्प रचते हैं, वैसे-वैसे ऊर्जा भी पैदा होती है। यदि हम स्वयं को यह याद दिलाएं कि मैं एक शांत स्वरूप आत्मा हूं, तो यह संकल्प शांति की ऊर्जा पैदा करता है। जिससे मन और चित शांत होने लगते हैं और संस्कारों का भी परिवर्तन होने लगता है। किसी संस्कार को नया बनाने के लिए उसकी आदत डालना आवश्यक है, इसलिए स्वयं के संस्कारों को बदलने के लिए आत्म-अनुभूति का अभ्यास आवश्यक है। इस अभ्यास से ही आत्मा की सोई हुई शक्तियां जागृत होने लगती है और पुराने संस्कारों को खत्म करने की शक्ति आने लगती है। आत्मा अपने विकृत संस्कारों को बदल पाने में कई बार असमर्थ महसूस करती है, परंतु आत्म-अनुभूति के बार-बार अभ्यास से न केवल नवीन संस्कारों का सृजन होने लगता है बल्कि पुराने संस्कारों का खात्मा भी होने लगता है।

आत्म-अनुभूति के लिए आत्म-जागृति में रहना आवश्यक है, क्योंकि कई जन्मों से हम देह की जागृति में रहे और दैहिक संस्कार बनने लगे। जिससे आत्मा कमजोर बनती गई। जैसे पानी का असली स्वधर्म शीतलता है। यदि उसे गर्म किया जाए तो वह अपना असली स्वरूप खो देता है और गर्म हो जाता है और ठंडक में रखें तो पानी फिर से शीतल हो जाता है। उसी प्रकार आत्मा भी अपनी गलत जागृति से विकृत हो जाती है तथा अपना असली स्वधर्म शांति व पवित्रता खो बैठती है। यदि फिर से वह आत्म-अभिमानी होने का अभ्यास करे तो उसके खोए हुए गुण व शक्तियां फिर से लौटने लगते हैं और वह सशक्त बनने लगती है।

निरंतर अभ्यास से आंतरिक बल सुदृढ़ होता है और जीवन में आने वाली कई कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम हो जाती है। उसे परिस्थितियां छोटी महसूस होने लगती है तथा आत्मबल बड़ा लगने लगता है। आत्मा पर चढ़ी मैल उतरने लगती है। आत्मा स्वयं को हल्का महसूस करती है और देह से अलग अनुभव करने लगती है।

यह अनुभूति न केवल स्व का परिवर्तन करती है, बल्कि इससे दूसरों पर अथवा वातावरण पर भी प्रभाव पड़ता है। यह प्रकृति और पुरुष का खेल है। इस खेल में प्रकृति के साथ हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध है। आत्मा जब अपने असली स्वरूप में स्थित होती है तो उससे फैले प्रकंपन आस-पास के व्यक्तियों व वातावरण पर एक सकारात्मक प्रभाव डालने लगते है।

शरीर पांच तत्वों से बना है और आत्मा प्रकाश स्वरूप है। आत्मा एक सूक्ष्म शक्ति है जिसे हम छू नहीं सकते। इसलिए स्थूल चीजों के गुण अलग होते है और आत्मा के गुण अलग है। स्थूल गुणों का आवरण आत्मा के सुंदर गुणों को ढक लेता है और आत्मा के व्यवहार में भौतिकता व देह के चरित्र नजर आने लगते हैं। किंतु आत्म-अनुभूति से जब हम स्वयं को शरीर से अलग समझने लगते हैं तो स्थूलता का प्रभाव आत्मा पर हावी नहीं होता और वह अपने वास्तविक रूप में टिक कर कर्म करती है जो कि उसके व्यवहार में झलकने लगता है।

जब आत्मा अपने स्वधर्म में टिक कर कार्य करती है तो यह स्थिति कर्मयोग कहलाती है तथा वह श्रेष्ठ कार्य करती है। इससे उसके पुण्य का खाता जमा होने लगता है। आत्म स्मृति से आत्मा वातावरण, निंदा, ईर्ष्या, अपमान, परचिंतन से मुक्त रहती है और दूसरों द्वारा किए गए अनापेक्षित व्यवहार से भी परे रहती है। अपने रूहानियत भरे व्यवहार से वह अन्य का भी परिवर्तन कर देती है।

आत्म-अनुभूति की स्थिति में आत्मा सहज ही परमपिता परमात्मा जो कि सर्वशक्तिमान्, शक्तियों का पावर हाऊस है उससे शक्तियां प्राप्त करने लगती है और शक्तिशाली बनती जाती है। उस पर अनेक जन्मों के चढ़े विकर्मों का बोझ भी खत्म होने लगता है और वह आंतरिक खुशी व शांति का अनुभव करने लगती है। इस प्रकार आत्म-अनुभूति से आत्मा सुंदर बनने लगती है और भृकुटि के बीच स्थित आत्मा का प्रकाश उसके चेहरे से भी चमकने लगता है। आत्मा दिव्य गुणों से संवर जाती है और उसकी जीवन रूपी बगिया भी महकने लगती है। जिस आंतरिक शांति की तलाश में आत्मा बाहर भटकती है वह उसे स्वयं ही महसूस करने लगती है।

लेखिका: राजकीय तकनीकी महिला संस्थान फरीदाबाद में व्याख्याता हैं।
Email: bkpoonamverma@gmail.com

समाज में अराजकता का कारण स्वयं को भूलना

जब हम आत्मिक स्वरूप में होते है तो जाति पाति, ऊंच नीच का भेद समाप्त हो जाता है। साथ ही हमारी भाई-बहन अथवा भाई-भाई की दृष्टि हो जाती है। इससे समाज में किसी भी प्रकार की अराजकता नहीं हो सकती। आज समाज में जितने भी आपसी मतभेद है, उसका कारण स्वयं को भूलना है। चाहे घर हो या कार्यस्थल यदि कहीं पर भी हमें पूर्ण सफल होना है तो हमें अपने असली स्वरूप अर्थात् आत्मिक रूप में स्थित रहकर कार्य करने की जरूरत है। चाहे बच्चा हो या बूढ़ा, स्त्री हो या पुरुष सभी के अन्दर एक अविनाशी आत्मा निवास करती है। इसके सही परिचय से बढ़ने वाली मानसिक कुरीतियों पर अंकुश लग सकता है। परमात्मा ने आकर सबसे पहले हम कौन है। इसकी पहचान दी। जिसे आत्मा की पहचान होगी, वहीं आत्मा में गुणों और शक्तियों का भी पहचान कर सकेगा। आत्मा की पहचान से सारी शक्तियां विकसित होने लगती है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू, राजस्थान

आत्मा के तीनों कालों की कहानी

जब आत्मा परमधाम से आई थी तो 16 कला संपूर्ण सतोप्रधान थी लेकिन जन्म लेते-लेते आज पतित बन चुकी है

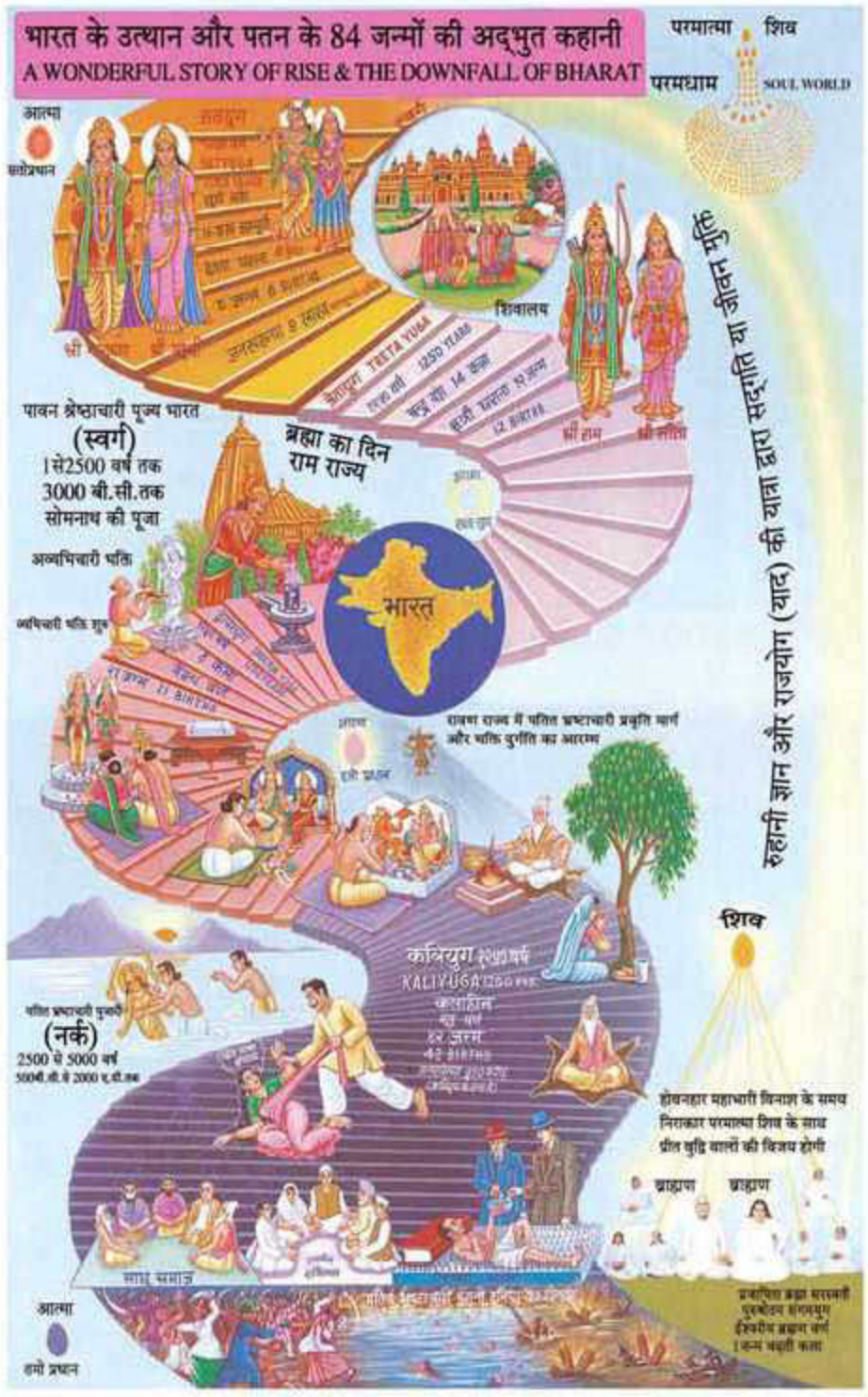

मनुष्यात्मा के होते 84 जन्म

मनुष्यात्माएं 5000 वर्षों के सृष्टि चक्र में कुल 84 जन्म लेती हैं। इन 84 जन्मों का और 5000 वर्ष के चक्र का ज्ञान न होने के कारण ही 84 के चक्कर की उक्ति को लेकर शायद 84 लाख योनि की कल्पना की गई है। इन 5000 वर्षों में सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग नाम के चार युग हैं। हरेक युग की आयु 1250 वर्ष होने से सतयुग में उसके कुल 8 जन्म होते हैं।

त्रेतायुग में औसत आयु 125 वर्ष होने से कुल 12 जन्म होते हैं। सतयुग और त्रेतायुग, दोनों को मिलाकर कुल 2500 वर्षों में भारतवासी मनुष्यात्माओं के कुल 21 जन्म होते हैं। द्वापरयुग में औसत आयु कम हो जाने से उनके कुल 21 जन्म होते हैं और कलियुग में आयु क्षीण हो जाने से कुल 42 जन्म होते हैं। इस प्रकार 5000 वर्ष के सारे कल्प में भारतवासियों के कुल 84 जन्म होते हैं।

कल्प की आयु 5000 वर्ष

पुराणवादी लोग कहते हैं कि भारतवर्ष का वर्णन करते हुए विष्णु पुराण में लिखा है कि इस द्वीप में मनुष्य 5000 वर्ष तक जीते हैं और श्रीमद्भगवद्गीता में लिखा है कि भारतवर्ष के निवासियों की एक-एक कल्प की आयु होती है। इन दोनों बातों को मिलाने से यह स्पष्ट हो जाता है चारों युगों अथवा कल्प की आयु 5000 वर्ष है क्योंकि भारत में ही चारों युग होते हैं और इसका 5000 वर्ष का पुराना इतिहास भी है। अन्य देशों और धर्मों का इतिहास 2500 वर्षों से अधिक पुराना नहीं है। भारत में ही 84 घंटे वाले मंदिरों की जो प्रथा चली आ रही है और 84 का चक्कर यह जो उक्ति है, इससे भी स्पष्ट होता है कि इन 5000 वर्षों के समय में भारतवासी मनुष्य 84 जन्म-पुनर्जन्म के चक्कर में आते हैं।

पवित्र आत्माएं ही जाती परमधाम

जब वह यह कार्य कर चुके होते हैं तो ऐटम और हाईड्रोजन बमों के महायुद्ध द्वारा कलियुगी पतित सृष्टि का महाविनाश हो जाता है। तब सभी आत्माएं परमधाम को लौट जाती हैं। जो आत्माएं उस काल पूर्णतः पवित्र नहीं बनी होती हैं, वे सूक्ष्मलोक में, धर्मराजपुरी में अपने रहे हुए विकर्मों के परिणाम स्वरूप दण्ड भोगती हैं। तब इस सृष्टि में पुनः सतयुग का आरम्भ होता है और जो आत्माएं 16 कला पवित्र बनकर गई होती हैं। वे कुछ काल मुक्ति की अवस्था में रहने के बाद, सतयुगी सृष्टि रूपी स्वर्ग में आकर जीवनमुक्त देव-पद को प्राप्त करती हैं और इस प्रकार वह आधा कल्प सुख भोगती हैं। वर्तमान समय संगमयुग चल रहा है। अब जो आत्माएं ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा जितना पवित्र बन रही हैं, उस अनुसार ही उन्हें अपने तीनों कालों को जान लेना चाहिए।

यह सृष्टि एक विराट नाटक शाला है। इस विराट नाटक में सबसे पहले सतयुग आता है। जिसमें परमधाम से केवल वही आत्माएं इस सृष्टिमंच पर पार्ट बजाने आती हैं जो कि सतोप्रधान स्वभाव वाली और 16 कला संपूर्ण पवित्र होती है। उस युग में काम-क्रोधादि विकार तथा दुःख और अशांति नाममात्र भी नहीं होती है। उस युग के लोग देवी-देवता कहलाते हैं और उस समय की सृष्टि ही स्वर्ग कहलाती थी।

सतयुग के बाद त्रेतायुग में सतो सामान्य स्वभाव वाली आत्माएं ब्रह्मलोक से इस सृष्टि पर आती है और सतयुग में आई हुई आत्माएं भी 2 कला कम अवस्था को प्राप्त होकर जन्म-पुनर्जन्म लेती रहती हैं।

1250 वर्ष त्रेतायुग के बाद द्वापरयुग आता है, तब रजोगुणी स्वभाव की आत्माएं आती हैं और सतयुग तथा त्रेतायुग में आई हुई आत्माएं भी अब रजोगुणी स्वभाव वाली हो जाती हैं। अब आत्माएं काम-क्रोधादि विकारों से आक्रांत होती हैं, इसलिए वे दुःख तथा अशांति भी भोगती हैं। इस समय सुख तथा शांति की प्राप्ति के लिए भक्ति, पूजा, यज्ञ, तप आदि शुरू होते हैं। इस प्रकार 1250 वर्ष के बाद कलियुग आता है।

कलियुग में हो जाती है तमोगुणी आत्माएं

जन्म लेते-लेते एवं काम, क्रोधादि विकारों की प्रवेशता से कलियुग तक आते-आते आत्माएं तमोगुणी हो जाती है। पूर्व युगों में आई हुई आत्माएं भी अपनी सतोगुणी पवित्रता और धर्म की कलाएं खो बैठती हैं और उनका जन्म-पुनर्जन्म होते रहने से जनसंख्या भी बढ़ती जाती है। जिसके कारण सृष्टि में दुःख तथा अशांति भी बढ़ती जाती है। कलियुग के अंत में, जब धर्म की अत्यन्त ग्लानि होती है और सभी आत्माएं तमोप्रधान, दुःखी तथा अशांत होती हैं, तब सभी आत्माओं से श्रेष्ठ, जन्म-मरण और सुख-दुःख से न्यारे, ज्ञान, शांति और आनंद के सागर परमपिता परमात्मा शिव परमधाम से इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं।

परमात्मा लेते ब्रह्मा के तन का आधार

सतयुग के शुरू में जो मनुष्यात्मा 16 कला सम्पूर्ण पवित्र एवं सर्वश्रेष्ठ थी और श्री नारायण के नाम से सारे विश्व पर राज्य करती थी और जो सत-त्रेता-द्वापर-कलियुग में पुनर्जन्म लेते-लेते अपने 84वें जन्म की वृद्धावस्था में होती है। उसके साधारण मानवी तन में परमपिता परमात्मा दिव्य प्रवेश करते हैं और उसका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखते हैं। उनके श्री-मुख से गीता-ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं।

कर्म का फल सभी को मिलता ही हैं

यह संसार अच्छे एवं बुरे सभी तरह के लोगों से भरा पड़ा है। यहां कोई अच्छे कर्म करता है तो कोई बुरे कर्म करता है। उसके सभी कर्मों का फल उसे उसी जन्म में नहीं मिलता है। यदि पुनर्जन्म न होता और मनुष्य को अगले जन्म में अपने कर्मों का फल न भोगना पड़ता, तब तो हरेक व्यक्ति अपने कर्मों के बारे में असावधान होकर छल, कपट, क्रोध और द्वेष आदि किसी भी तरीके से अपना वर्तमान प्रयोजन सिद्ध करने की कोशिश करता और दूसरे का ध्यान नहीं रखता। इससे तो समाज और देश में अनैतिकता और अनाचार का ही वातावरण बनता।

21 जन्म मनुष्यात्मा सुख भोगती है

परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो सहज ज्ञान दिया है उसके आधार पर इस सृष्टि में आधा समय सुख और आधा समय दुःख होता है।

सतयुग और त्रेतायुग में सम्पूर्ण सुख-शांति और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है और द्वापर तथा कलियुग में दुःख-मिश्रित सुख होता है। इसी कारण से सतयुग और त्रेतायुग की सृष्टि को स्वर्ग कहा जाता है। इन दो युगों में मनुष्य की जो अवस्था होती है। वहीं सद्गति की अवस्था होती है। यह अवस्था कुल 21 जन्म के लिए प्राप्त होती है। सतयुग और त्रेतायुग में कुल 21 जन्म और सारे कल्प में 84 जन्म होते हैं। मनुष्य योनि के इन्हीं 84 जन्मों में मनुष्यात्मा भ्रमण करती है।

आत्मा का मूल स्वभाव क्या है?

आत्मा के मूल गुण शांति, प्रेम, पवित्रता, आनंद, शक्ति, ज्ञान और सुख है। ये सातों गुण प्रत्येक आत्मा में विद्यमान है। हमें स्वयं की पहचान नहीं होने के कारण शांति के लिए दर-दर भटकते रहते है। हर आत्मा अनादि स्वरूप से ज्ञानस्वरूप, पवित्रस्वरूप, शांतिस्वरूप, प्रेमस्वरूप, सुखस्वरूप, आनन्दस्वरूप, शक्ति स्वरूप है। कोई भी व्यक्ति अशांति, दुःख या नफरत नहीं चाहता है, क्योंकि ये आत्मा के मूल गुण या संस्कार नहीं है। दुनिया में प्रत्येक मनुष्य की इच्छा होती है कि वह शांति से रहे, सब लोग उसे प्रेम करें, जीवन में सुख हो, आनंद हो इससे यह सिद्ध होता है कि पहले उसने इन गुणों को धारण किया है तभी उसे ये गुण अच्छे लगते है।

आत्मा के सातों दिव्य गुण

- **शांति:** शांति आत्मा का स्वधर्म है। आत्मा का मूल स्वभाव ही शांति है और हर एक आत्मा शांति से जीवन जीना चाहती है। अनेक जन्म लेते-लेते आत्मा अपना मूल स्वरूप भूल चुकी है। जिससे आज प्रत्येक मनुष्यात्मा शांति की तलाश में दर-दर भटक रही है। शांति तो हमारे गले का हार है।
- **प्रेम:** आत्मा का मूल स्वभाव प्रेम है। प्रत्येक आत्मा अपने वास्तविक रूप में प्रेमस्वरूप है। जगत की प्रत्येक मनुष्यात्मा चाहती है कि सब उसे प्रेम करें। सब उसका आदर करें। प्रेम पूर्वक व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति के लिए अच्छा लगता है। कहा गया है इस संसार को सिर्फ प्रेम से ही जीता जा सकता है।
- **पवित्रता:** आत्मा परमधाम में पूर्ण रूप से पवित्र थी। जैसे आत्मा के पिता परमपिता परमात्मा पवित्रता के सागर है वैसे ही आत्मा भी पवित्रस्वरूप है। लेकिन जन्ममरण के चक्कर में आते-आते और अपने स्वरूप भूलने एवं काम, क्रोधादि विकारों के कारण आज प्रत्येक मनुष्यात्मा पतित बन चुकी है।
- **आनंद:** आनंद भी आत्मा का एक गुण है। आत्मा के पिता परमपिता परमात्मा आनंद के सागर है। वैसे ही आत्मा भी आनंदस्वरूप है। सदा आनंद के झूले में झूलने वाली एक आध्यात्मिक सत्ता है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में आनंद से रहना चाहता है। कोई नहीं चाहता कि उसे दुख हो कष्ट हो।
- **सुख:** आत्मा के दिव्य गुणों में से सुख भी आत्मा का एक गुण है। प्रत्येक मनुष्यात्मा की इच्छा होती है कि वह जीवन में सुख से रहे। जीवन में कभी कष्ट न हो, दुख न हो इसका मतलब है कि आत्मा कभी सुख की स्थिति में, आनंद की स्थिति में रही होगी।
- **शक्ति:** आत्मा अपने मूल रूप में शक्तिस्वरूप है। सदा शक्तियों से भरपूर है। आत्मा अपने अंदर दिव्य शक्तियों को संजोए हुए है। जरूरत है तो उन्हें संजोने की। आत्मा देह अभिमान के चलते अपने गुणों को भूल चुकी है।
- **ज्ञान:** ज्ञान भी आत्मा का निजी गुण है। कलियुग के अंत और सतयुग के आदिकाल संगमयुग पर स्वयं परमपिता परमात्मा शिव इस धरा पर अवतरित होकर हम मनुष्यात्माओं को सच्चा गीता ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा देकर पतित से पावन बनाने का दिव्य कार्य कर रहे है।

आत्मा भूल चुकी अपने गुण

आत्मा जब परमधाम से पहली बार इस सृष्टि रूपी कर्मक्षेत्र पर उतरती है, तब वह अपने आदि स्वरूप या संस्कारों में पवित्र और सतोप्रधान होती है। लेकिन बार-बार पुनर्जन्म लेने के कारण आत्मा शरीर के प्रति आसक्त हो जाती है। जिससे देह-अभिमान की उत्पत्ति होती है। देह-अभिमान के कारण ही आत्मा पांच विकारों अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वशीभूत हो जाती है। जिसके फलस्वरूप वह अपने मूल गुणों को खो देती है। यही विकार आत्मा के दुःख और अशांति के मूल कारण है। आज आत्मा अपना स्वरूप, स्वदेश, स्वधर्म तथा अपने परमपिता को भूल गई है और विषय-विकारों की दासी बन चुकी है।

पाठक पीठ

मुझे बहुत खुशी हुई

मैं एक व्यवसायी हूं। शिव आमंत्रण का दूसरा अंक पढ़कर मुझे बहुत अच्छा लगा। इसमें नई दुनिया के संबंध में पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई। और हमारी दुआ है कि यह न्यूज पेपर जल्द ही परमपिता परमात्मा की प्रत्यक्षता के निमित बनेगा।

शशिकांत प्रसाद, कल्याण, मुंबई, महाराष्ट्र

भगवान का निमंत्रण आया

शिवरात्रि पर मुझे शिव आमंत्रण पेपर मिला। उसे पढ़कर मुझे इतनी खुशी कि मैं इसे शब्दों में नहीं बता सकती हूं। मैं इतना कह सकती हूं कि जैसे यह भगवान का निमंत्रण हमारे लिए ही आया है और मुझे भगवान पुकार रहा है। मैं बहुत जल्द ही परमात्मा से मिलन मनाना चाहती हूं।

सविता देवी, छत्तीसगढ़

मेरा भय समाप्त हो गया

शिव आमंत्रण का पहला और दूसरा अंक मुझे मिला। मुझे हमेशा यह भय रहता था कि यह दुनिया खत्म हो जाएगी तब क्या होगा, लेकिन इस अंक को पढ़कर मुझे आने वाली दुनिया के बारे में पता चला और भय समाप्त हो गया। इसके लिए मैं परमात्मा को धन्यवाद देना चाहता हूं।

विशालसिंह, पटना

मुझे सच्ची राह मिली

शिव आमंत्रण पेपर पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इस पेपर को पढ़कर मेरी भगवान के संबंध में अनेक भ्रांतियां दूर हो गई और मुझे सच्ची राह मिली। अब मैं नियमित रूप से ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेंद्र पर जा रही हूं। वर्तमान समय में ऐसे मूल्यनिष्ठ पेपर की बहुत ही आवश्यकता है। जो कि समाज में फैले अंधविश्वास को दूर कर सके।

सोनी ताई, नागपुर

जितनी महिमा की जाए कम

मैं कॉलेज का छात्र हूं। मुझे कोचिंग जाते समय एक भाई ने शिव आमंत्रण पेपर दिया। इसे पढ़कर मुझे अनुभव हुआ इसकी जितनी महिमा की जाए कम है। इसमें सृष्टि-चक्र और संगमयुग के बारे में पढ़कर मुझे वर्तमान समय की कीमत समझ में आई कि यह कितना मूल्यवान युग बीत रहा है। मैं अब तक इस युग से अनभिज्ञ था।

आशीष कुमार गुप्ता, दिल्ली

अद्भुत लगा यह अंक

शिव आमंत्रण अखबार में 'नई दुनिया के आगमन की तैयारी' एवं सृष्टि चक्र का रहस्य पढ़कर मुझे मालूम चला कि परमात्मा का अवतरण हो चुका है। पूरा अंक ही मुझे अद्भुत लगा और वास्तविक सत्य का ज्ञान हुआ। इसमें छपा एक-एक आर्टिकल सारगर्भित एवं सत्यता का रहस्योद्घाटन करता है। अखबार को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

अनूप अग्रवाल, इंदौर, मप्र

प्रतिक्रिया एवं सुझाव

यह अंक आपको कैसा लगा, कृपया आप अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव निम्न पते पर फोटो सहित भेंजे। प्रकाशन योग्य होने पर हम इसे प्रकाशित करेंगे।

पता: ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया विंग एण्ड पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबूरोड जिला सिरोही, राजस्थान पिन: 307501 (फोन: 02974-228230)

Email- shivamantran.media@gmail.com

मनुष्यात्मा पशु योनि में जन्म नहीं लेती

यह सवाल हमें लगातार भ्रमित करता रहा है कि जब हम इस भौतिक शरीर को छोड़ते है तो हम दूसरी योनियों में चले जाते है। वह भी एक दो नहीं, बल्कि 84 लाख योनियों में। परन्तु जब मनुष्य एक शरीर छोड़ता है तो वह मनुष्य का ही जन्म लेता है। क्योंकि मनुष्यात्मा के 84 जन्म होते है। जैसा बीज वैसा फल। जब हमारा बीज मनुष्य योनि का है तो हमारा जन्म भी तो मनुष्य योनि में ही होगा। यह सत्य है जिसे परमात्मा ने उजागर किया है।

आध्यात्मिकता से ही मूल्यों की पुनर्स्थापना संभव

आज पूरे मानव जाति को आध्यात्मिकता की आवश्यकता है। आध्यात्मिकता द्वारा ही मूल्यों को पुनर्स्थापित किया जा सकता है। इंसान को परमात्मा ने ज्ञान दिया, लेकिन वह ज्ञान से विमुख होकर पशु सम व्यवहार कर रहा है। मानवता सबसे बड़ा धर्म है और इसी धर्म के पालन का संदेश इस तपोभूमि द्वारा प्रसारित किया जा रहा है।

श्रीमन महाराज निरंजना जगद्गुरु श्री मल्लिकार्जुन मुरुग्राजेंद्र महास्वामी, शिमोगा, कर्नाटक

परमात्मा के ध्यान से आती हैं शक्ति

परमात्मा निराकार है, उनसे ध्यान लगाने से हमारे अंदर शक्ति आती है जिससे हम स्वत: ही बुराईयों से बच जाते हैं। यहां का संचालन बहुत अच्छा है। यह संस्था निरंतर उन्नति करती रहे, ऐसी मेरी शुभकामना है।

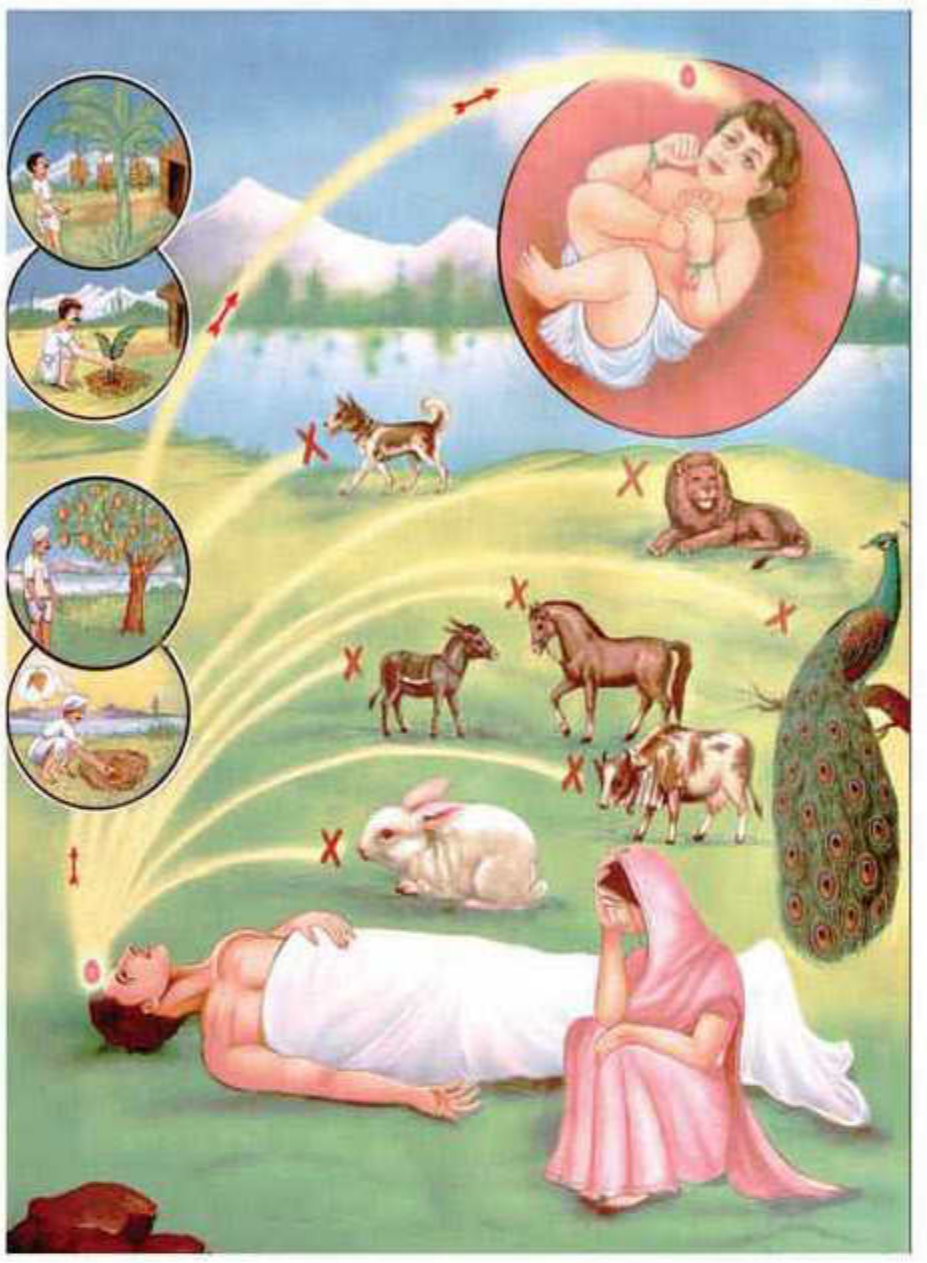

संत कहन सिंग, अध्यक्ष, पैंतालीस गुरुद्वारा, गोनिआनामंडी

हम सभी को यह शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए

ब्रह्माकुमारीज में जो शिक्षा दी जाती है वहीं धर्म है और वहीं विश्व धर्म है। सबका उद्धार करने के लिए परमात्मा का शांति का संदेश दिया जा रहा है जो कि हम सभी का आधार है। हम सभी को ब्रह्माकुमारी संस्था में आकर शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, जिससे कि हम सभी का जीवन पवित्र बन जाए।

डॉ. शांत सिरा जी, महास्वामी, कोलाडा मठ, बेंगलोर

शांति के लिए स्व का ज्ञान जरूरी

आज संसार में मानव अपने लक्ष्य को भूल गया है। उसे यह ज्ञान ही नहीं है कि यह शरीर हमें किसलिए मिला है और हमें इससे क्या करना चाहिए और कब तक हमारा मनुष्य जीवन हमारे साथ है। मनुष्य चाहता है कि उसे सदैव सुख मिले, कभी दु:ख न मिले। भौतिक सुख तो हमें सांसारिक साधनों से मिल सकता है, लेकिन शांति नहीं। इसके लिए हमें स्व का ज्ञान होना आवश्यक है। तभी हमारा जीवन सुख-शांति से संपन्न बन सकता है। आज हमारे पुण्य कर्म और श्रेष्ठ भाग्य का ही फल है कि हम ब्रह्माकुमारीज के इस पावन धरा पर आ सके हैं।

स्वामी रामानंद जी आचार्य, पीठाधीश, मुकाम बीकानेर, राजस्थान

आध्यात्मिकता द्वारा ही विश्व में शांति संभव है

भारत में श्रेष्ठ व्यक्ति वहीं है जो अपने जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाता है, क्योंकि आध्यात्मिकता द्वारा ही विश्व में शांति संभव है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारों के कारण ही मानव जीवन अंधकारमय हो गया है। अब हमें अपना बुद्धियोग परमात्मा से जोड़कर विकारों से मुक्त होना है। तभी जीवन सुखमय बन सकता है। हम सभी आत्मा, परमात्मा के बच्चे हैं। अध्यात्म, एकता, प्रेम का अनुभव करने के लिए राजयोग का अभ्यास करना आवश्यक है।

बृजकिशोर शर्मा, शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार

मनुष्यात्मा पुनर्जन्म लेती है

मनुष्यात्मा पुनर्जन्म लेती है। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आत्मा शरीर द्वारा जो भी कर्म करती है उसी के अनुसार वह पुनर्जन्म लेती है। हम देखते हैं कि कोई आत्मा किसी धनवान और सुशील माता-पिता के यहां जन्म लेती है और अन्य कोई निर्धन, कंगाल, अशिक्षित और चरित्र-भ्रष्ट घराने में जन्म लेती है। आखिर इसका भी तो कोई कारण होगा? कारण के बिना तो कोई भी कार्य नहीं होता। अत: इससे स्पष्ट है कि आत्मा एक जीवन में जो कर्म करती है उसका वह कुछ फल तो उसी जीवन में भोगती है और जो फल भोगना रह जाता है, उसे वह अगले जन्म में भोगती है। उसी फल को भोगने के लिए ही वह अपने पूर्व संस्कारों के अनुसार दूसरा जन्म लेती है।

शिशु के हंसने-रोने से पुनर्जन्म सिद्ध: जन्म लेते ही शिशु कभी रोता है, तो कभी हंसने लगता है। उसके सामने कोई व्यक्ति या चीज न भी हो तो वह कभी मुस्कुराता और कभी उदास हो जाता है। जब वह अपने संबंधियों को अच्छी तरह से पहचानता भी नहीं है तो वह किसे याद कर कभी मुस्कुराता और कभी उदास हो जाता है? इसका एक ही कारण है कि उसकी इंद्रियां कोमल होने के कारण वह अपने भावों को व्यक्त नहीं कर सकता, इसलिए वह अपने पूर्व जन्मों के संस्मरणों को याद कर ही कभी हंसता और कभी उदास हो जाता है।

दो बच्चों में भेद का कारण पुनर्जन्म: हम देखते हैं कि एक ही माता-पिता के दो बच्चों में भी बहुत बातों में असमानता पाई जाती है। जबकि उन्हें खाने-पीने को भी एक ही जैसा मिलता है। उनके माता-पिता भी एक ही हैं फिर भी उनका स्वभाव, संस्कार और भाग्य दूसरे से नहीं मिलता। इसका कारण उसके पूर्व जन्म के संस्कार तथा कर्म-फल ही हैं। अत: इससे भी पूर्व जन्म की मान्यता सिद्ध होती है।

विस्मृति आत्मा का गुण है: आत्मा में जैसे स्मृति का गुण होता है वैसे ही विस्मृति का गुण भी पाया जाता है। वह इसी जन्म की कई पिछली बातों को भूल जाती है तो फिर पिछले जन्म की बात ही क्या है? कई बार तो मनुष्य दो-चार दिन पहले की ही बातों को भूल जाता है।

हम देखते हैं कि निद्रा, मूर्छा, दिमागी चोट, स्थान-संबंध-परिस्थितियां बदलने पर भी बहुत सारी बातों को व्यक्ति भूल जाता है। इसी प्रकार मृत्यु भी एक ऐसी घटना है जिसके कारण मनुष्य बहुत सारी बातों को भूल जाता है। फिर जो कुछ उसे याद भी रहता है तो वह शैशव अवस्था होने के कारण उसे बता नहीं पाता है और जब तक वह बातचीत करने के योग्य होता है तब तक वह बहुत सारी बातों को भूल जाता है।

सभी एक पिता की संतान

हम सभी आत्माएं एक पिता की संतान हैं। जन्म-मरण के चक्कर में आते-आते हम स्वयं को ही भूल गए हैं। इसलिए आज समाज में अनेक प्रकार की विसंगतियां है। जब हम शरीर के भान से अलग होते हैं तब हमारी आत्मा की शक्तियां विकसित होना प्रारम्भ हो जाती है। पवित्रता, सुख, शांति और आनन्द सब आत्मा के निजी गुण है। वे तब विकसित होते हैं। जब हम स्वयं को आत्मा समझते हैं। आत्मा का ज्ञान सिर्फ परमात्मा के अलावा और कोई नहीं दे सकता। इसलिए परमात्मा ने आकर हमें आत्मा का ज्ञान दिया है। इसलिए हम सभी स्वयं को आत्मा समझ, परमात्मा का ध्यान करें तो हमारे जीवन में सुख शांति का संचार हो जाएगा।

राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू

विशेष योग्यता का कारण पूर्व जन्म के संस्कार: कई व्यक्ति छोटी आयु में ही संस्कृत, गायन, नृत्यकला या अन्य किसी विषय में असाधारण प्रतिभा प्राप्त कर लेते हैं। इतना ही नहीं कई बच्चे तो अनेक शास्त्र, ग्रंथ आदि कंठस्थ कर लेते हैं। यह सब उसके पूर्व जन्मों के संस्कार के कारण ही होता है।

बालकों के पुर्नजन्म की स्मृति की परीक्षा आजकल दार्शनिक और परामनोवैज्ञानिक करते हैं। पूर्वजन्म के संस्कारों के बिना मोजार्ट चार वर्ष की अवस्था में संगीत नहीं कम्पोज कर सकता था। लार्ड मेकाले और विचारक मील चलना सीखने से पूर्व लिखना सीख गए थे।

पूर्वजन्म की घटनाओं को भूलना आवश्यक

पूर्वजन्म की बातों को भूल जाना कई कारणों से आवश्यक है। एक तो वर्तमान जन्म में अपने कर्मों के फल के रूप में सुख-दु:ख भोगने के लिए भी पूर्वजन्म की घटनाओं और संबन्धों को भूलना आवश्यक है। दूसरा, यह हरेक मनुष्य को अपने पुर्नजन्म की स्मृति हो तो संसार में गड़बड़ हो जाएगी। क्योंकि कोई मनुष्य बाजार में जाते हुए यह पहचानकर कि अमुक व्यक्ति ने पूर्वजन्म में उसे मारा था, तो वह उससे वहीं पर लड़ना-झगड़ना शुरू कर देगा।

कोई बच्चा यह देखकर कि अमुक महिला पूर्वजन्म में उसकी माता थी, उसे वह पकड़कर अपने घर ले जाने के लिए जिद करने लगेगा। अत: पूर्वजन्म की बातों की विस्मृति होना बहुत जरूरी है। पुनर्जन्म की स्मृति न होने से यह नहीं मान लेना चाहिए कि पुनर्जन्म होता ही नहीं है।

बल्कि, किसी व्यक्ति में काम, किसी में क्रोध के संस्कार होने से तथा किसी को एक से लाभ, किसी को उसी से हानि होने से यह स्पष्ट होता है कि हम पिछले भी कुछ संस्कारों तथा कर्मों का हिसाब लेकर आए हैं, वर्ना यह संसार ऐसा न होता जैसा हम देख रहे हैं।

वैज्ञानिकों ने भी की पुनर्जन्म की व्याख्या

पुनर्जन्म आज एक धार्मिक सिद्धांत मात्र नहीं है। इस विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों एवं मनोवैज्ञानिक शोध संस्थानों में ठोस कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में यह अंधविश्वास नहीं, बल्कि वैज्ञानिक तथ्य के रूप में स्वीकारा जा चुका है। पुनरागमन को प्रामाणित करने वाले अनेक प्रमाण आज विद्यमान हैं। इनमें सबसे बड़ा प्रमाण ऊर्जा संरक्षण का सिद्धांत है।

विज्ञान के सर्वमान्य संरक्षण सिद्धांत के अनुसार ऊर्जा का किसी भी अवस्था में विनाश नहीं होता है। ऊर्जा का सिर्फ रूप परिवर्तन हो सकता है अर्थात् जिस प्रकार ऊर्जा नष्ट नहीं होती। वैसे ही चेतना का नाश नहीं हो सकता। चेतना को वैज्ञानिक शब्दावली में ऊर्जा की शुद्धतम अवस्था कह सकते हैं।

चेतना सत्ता का मात्र एक शरीर से निकल कर नए शरीर में प्रवेश संभव है। पुनर्जन्म का भी यही सिद्धांत है। भौतिक ऊर्जा और आत्म ऊर्जा में फर्क इतना ही है कि आत्म ऊर्जा चेतना युक्त होती है, जबकि भौतिक ऊर्जा चेतना से रहित होती है। कर्मफल एवं जन्म-मरण का चक्र मनोवैज्ञानिक एवं डॉक्टरों के अनुसंधान पुनर्जन्म की पुष्टि करते हैं।

पुनर्जन्म की घटनाओं पर शोध करने वाले अमेरिका वर्जीनिया विश्वविद्यालय में साइकियाट्री विभाग के प्रमुख डॉ. अयान स्टीवनसन ने अपने शोध में पाया है कि पुनर्जन्म की घटनाएं झूठ नहीं है, बल्कि यह सच है। भारत में इनको मिली 10 पुनर्जन्म की घटनाओं का इन्होंने टेन फेमस इंडियन रिइनकार्नेशन केसेस नाम पुस्तक में विवरण लिखा है।

वैज्ञानकि रूप से सत्य है पुनर्जन्म

राजस्थान विश्वविद्यालय के क्रियात्मक मनोविज्ञान केंद्र निर्देशक डॉ.एचएन बैनर्जी ने भारत, ब्रिटेन, डेनमार्क, नार्वे, अमेरिका, फिलीपींस आदि देशों में जो लोग कहते थे कि हमें पुनर्जन्म की स्मृतियां याद हैं, उनसे मिलकर शोध और अध्ययन करने के बाद इन्होंने माना कि पुनर्जन्म सैद्धांतिक एवं वैज्ञानिक रूप से सत्य है।

बैंगलोर की राष्ट्रीय मानसिक एवं नरविज्ञान संस्था के मनोविज्ञान विभाग की प्राध्यापिका डॉ. सतवंत पासीचा ने 25 वर्षों तक करीब 500 से अधिक पुनर्जन्म की घटनाओं को, उन स्थानों पर जाकर, उन लोगों से भेंटवार्ता कर, उनका अध्ययन करके अनुसंधान कर यह सिद्ध किया है कि उनमें 68 फीसदी पुनर्जन्म की घटनाएं सत्य निकली हैं। इनमें 76 फीसदी लिंग परिवर्तन की घटनाएं हैं। अमेरिका के मनोरोग चिकित्सक डॉ. एलिझेबेत कुब्लेर रोस ने करीब 25 वर्ष तक अध्ययन कर पाया मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। मृत्यु के बाद भी जीवन आगे बढ़ता है।

...तो शक्तिवान् बन जाएंगे आप

जी, हां.. यह सत्य है कि आप शक्तिमान् बन सकते हैं। इसके लिए कुछ भी करने की जरूरत नहीं सिर्फ जरूरत ये है कि हम अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाए। इससे आत्मा में निहित आठों शक्तियां जागृत हो जाती है। जिनसे हमें जीवन में परिस्थितियों, समास्याओं को हल करने में मदद मिलती है और हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं। ये अष्ट शक्तियां निम्न है-

- **सहनशक्ति:** यह शक्ति भी है तो सहनशीलता का गुण भी है। जब हम इस गुण को अपने जीवन में धारण करते हैं तो यह धीरे-धीरे शक्ति का रूप ले लेती है। यह शक्ति हमारे अंदर आत्मविश्वास पैदा करती है। जो व्यक्ति सहन करता है उसका चरित्र हमेशा ऊंचा दर्शाया जाता है। दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनमें सहनशीलता का मुख्य गुण था। सहनशक्ति ही महानता का आधार है।
- **समाने की शक्ति:** लोग सहन तो कर लेते हैं, लेकिन बात को अपने में समा नहीं पाते हैं जिसके कारण उनकी बनी हुई बात भी बिगड़ जाती है। इस शक्ति की कमी होने के कारण हमारे पारिवारिक संबंधों में कड़वाहट आ जाती है। सहन किया ये तो महानता हो गई, परंतु सहनशक्ति के साथ-साथ समाने की शक्ति भी आवश्यक है। जिस प्रकार सागर अनेक नदियों का किचड़ा वाला पानी समा लेता है उसी प्रकार हमें भी विशाल हृदय बनकर बातों को समा लेना चाहिए।
- **परखने की शक्ति:** आज चारों ओर छल, कपट का वातावरण बना हुआ है ऐसे समय में हमें परखने की शक्ति की आवश्यकता होती है। इस शक्ति की कमी होने के कारण व्यक्ति धोखा खा जाता है। इस तरह प्रैक्टिकल जीवन जीने के लिए हमें आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान न होने के कारण व्यक्ति परख नहीं पाता है असली क्या है और नकली क्या है।
- **निर्णय करने की शक्ति:** परखने की शक्ति हो और निर्णय करने की शक्ति न हो तो व्यक्ति को बहुत पश्चाताप करना पड़ता है। हमारी बुद्धि का कांटा एकाग्र है और परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ है तो हम कभी भी परखने और निर्णय के समय धोखा नहीं खा सकते हैं और सही समय पर सही निर्णय लेकर सफलता स्वरूप बन जाते हैं।
- **सामना करने की शक्ति:** राजयोगी, व्यक्ति का सामना नहीं करता है लेकिन परिस्थितियों का सामना वह बड़ी ही सहज रीति से कर लेता है।
- **सहयोग की शक्ति:** जीवन में सहयोग की शक्ति भी बहुत आवश्यक है। एक -दूसरे को हम सहयोग तभी दे सकते हैं जब हमारे संस्कार दूसरे से मेल खाते हैं। अगर संस्कार नहीं मिलते हैं तो सहयोग लेना और देना दोनों ही मुश्किल हो जाता है।
- **विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति:** कई बार हम देखते हैं कि बात तो छोटी सी होती है, लेकिन विस्तार करते-करते उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है और मनुष्य के जीवन में परेशानियां आनी शुरू हो जाती हैं। यदि हम बातों में उलझ गए तो अपना बचाव नहीं कर पाते हैं। जैसे कछुआ कोई भी परिस्थिति आने पर स्वयं को संकीर्ण भी कर लेता है और आवश्यकता पड़ने पर विस्तार भी कर लेता है।
- **समेटने की शक्ति:** हमें कहीं बाहर जाना हो तो हम साथ घर तो उठाकर नहीं ले जाते हैं, बल्कि अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को लेते हैं। उसी प्रकार इस जीवन रूपी यात्रा में हमारी मूल्यवान वस्तुएं हैं अपने पुण्य कर्म का खाता, दुआओं का खाता, श्रेष्ठ विचार, गुण, शक्तियों का खाता तो हमें इसको संभाल करनी होती है और इसे दूषित संग से बचाना भी होता है।

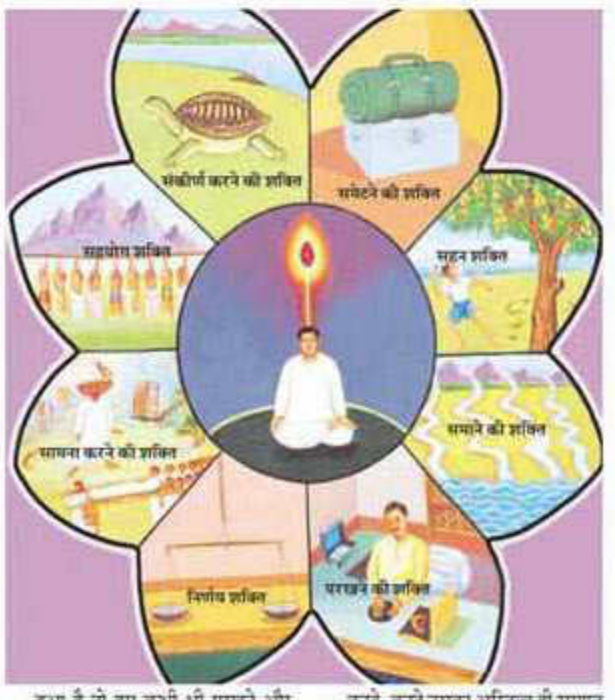

मृत्यु जीवन का अंत नहीं, पड़ाव मात्र है

भारतीय धर्म दर्शन में आत्मा की अमरता एवं पुनर्जन्म के सिद्धांत को आरंभ से ही मान्यता प्रदान की गई है। इस संबंध में श्रीमद्भगवद्गीता में लिखा है कि - जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र को त्याग कर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार यह जीवात्मा भी पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करता है। गीता के चौथे अध्याय के पांचवें श्लोक में लिखा है कि - हे अर्जुन, मेरे और तुम्हारे अनेक जन्म बीत गये हैं। ईश्वर होकर मैं उन सबको जानता हूं, परंतु हे परंतप, तू उसे नहीं जानता। वर्तमान में तार्किक, व्यवहारिक और पुनर्जन्म की असंख्य घटनाओं से यह तथ्य स्वीकार किया जाने लगा है कि मृत्यु जीवन का अंत नहीं है, यह एक पड़ाव मात्र है।

हमारा भाग्य पिछले जन्मों के कर्मों पर आधारित

पुनर्जन्म का अर्थ है पुन: नवीन शरीर को प्राप्त करना। प्रत्येक मनुष्य का मूल स्वरूप आत्मा है न कि शरीर। हर बार मृत्यु होने पर शरीर का ही अंत होता है। इसलिए मृत्यु को देहांत अर्थात् देह का अंत कहा जाता है। मनुष्य का असली स्वरूप आत्मा है। पूर्व कर्मों का फल भोगने के लिए आत्मा पुन: नया शरीर प्राप्त करती है। आत्मा तब तक जन्म-मृत्यु के चक्र में घूमती रहती है जब तक कि आत्मा का परमात्मा से पुन: मिलन नहीं हो जाता। तब तक जन्म-मृत्यु-पुनर्जन्म-मृत्यु का क्रम लगातार चलता रहता है।

आत्म अनुभूति से ही परमात्म अनुभूति संभव

स्वयं को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा शिव को याद करने से आत्मा में पुन: शक्तियों का संचार होने लगता है

जब तक हम स्वयं को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद नहीं करेंगे तब तक हमें परमात्म अनुभूति नहीं हो सकती है। जैसे आत्मा का स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है वैसे ही परमात्मा भी ज्योतिबिन्दु स्वरूप है उन्हें इन नेत्रों से नहीं देखा जा सकता है। जब हम बिन्दु स्वरूप में स्थित होते हैं तब परमात्मा की याद स्वत: ही आने लगती है और आत्मा एक अलौकिक आनंद की अनुभूति में खो जाती है। इससे परमात्मा के गुण आत्मा में स्वत: ही समाने लगते हैं। परमात्म अनुभूति से आत्मा स्वयं को भरपूर अनुभव करने लगती है। इसी अवस्था को ऋषि-मुनियों ने योग की पराकाष्ठा एवं परमात्म मिलन कहा है। इस अवस्था के पश्चात ही आत्मा सम्पूर्णता की ओर बढ़ने लगता है।

सर्व दुखों का कारण अपना स्वरूप भूलना

आज संसार में जितने भी प्रकार के दु:ख हैं उन सभी का मूल कारण है - छ: विकार जिन्हें षट-रिपु भी कहा जाता है। आज हर एक मनुष्य में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और सुस्ती में से एक न एक विकार थोड़ा बहुत अवश्य है। इन विकारों का मूल कारण देह-अभिमान। देह-अभिमान के कारण ही मनुष्य को अनेकानेक दु:ख हैं। वह देह के आधार पर पुरुष या स्त्री के भान में आकर काम विकार के वशीभूत होता है और अपने ओज और तेज को खोकर शरीर को दुर्बल कर बैठता है। अब परमपिता शिव कहते हैं कि हे वत्सो! यदि आप सदा के लिए सम्पूर्ण सुख और शांति को चाहते हैं तो इस देह-अभिमान रूपी विष को नाश करने का उपाय करो। इस उद्देश्य से देही निश्चय अथवा आत्मनिष्ठ बनो और सब देहधारियों की तरफ से मन की आसक्ति हटाकर एक मुझ ज्योति-स्वरूप परमात्मा शिव ही की स्मृति में स्थित हो। इस सहज युक्ति से संसार के सारे कष्ट मिट जाएंगे और सतयुगी दैवी सृष्टि स्थापित हो जाएगी और यह संसार सुखधाम, वैकुण्ठ और फूलों का बगीचा बन जाएगा।

पुष्पे गंध तिले तैलं काष्ठे वह्निं पयो घृतम्। इक्षौ गुडं तथा देहे पश्यात्मानं विवेकत:।।

जिस प्रकार फूलों में खुशबू होती है, उसे देखा नहीं जा सकता है, सिर्फ महसूस किया जा सकता है। तिलों में तेल होता है पर दिखाई नहीं देता है, दूध में घी रहता है, सूखी लकड़ी में अग्नि होती है, ईख में गुड़ विद्यमान रहता है, परंतु ये सभी तभी प्राप्त होते हैं जब हम थोड़ा संघर्ष करते हैं। तिल से तेल निकालने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, दूध को मथने पर ही घी प्राप्त होता है, सूखी लकड़ियों को रगड़ने पर उनसे आग प्रकट हो जाती है, ईख के रस से गुड़ बनाया जाता है। ठीक इसी प्रकार हमारे शरीर में आत्मा विद्यमान है। मनुष्य स्वयं की बुद्धि और विवेक का सहारा लेकर ही आत्मा और परमात्मा का अनुभव कर सकता है।

- आचार्य चाणक्य

सभी धर्मों का मूल मंत्र शांति

सभी धर्मों और सम्प्रदायों का मूल मंत्र शांति है। जिसका प्रसार संयुक्त राष्ट्र संगठन से एनजीओ के रूप में जुड़ी यह संस्था विश्वभर में कार्य कर रही है। हिमालय की कंदराओं में बैठकर जो तपस्या करता है, वहीं सिद्ध नहीं हो सकता, परंतु आज परमात्मा की याद में रहकर जो सेवा करते हैं वह अपने आपमें सिद्ध महात्मा है।

स्वामी चक्रपाणि, अध्यक्ष, हिन्दू महासभा, नई दिल्ली

सुख-शांति के लिए मेडिटेशन आवश्यक

यदि हम अपने जीवन में आध्यात्मिकता को अपना लें तो दुर्गुण, दुराचार एवं भ्रष्टाचार का दुनिया से मिटा सकते हैं। आध्यात्मिकता के अभाव में ही दुर्गुणों का प्रादुर्भाव होता है। आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जानने से ही हम सुख-शांति का अनुभव कर सकते हैं। इसके लिए मेडिटेशन का अभ्यास आवश्यक है।

सिद्धाराम महास्वामी, रूद्राक्षी मठ नागनूर, बेलगाम

ध्यान से आत्मा बनेगी शक्तिशाली

जीवन की यात्रा में तीन दोस्त हैं शरीर, मन एवं आत्मा। शरीर के लिए तो हम अन्न ग्रहण करते हैं। इसी तरह मन के लिए भजन और आत्मा के लिए ध्यान आवश्यक है। अगर हम ध्यान नहीं लगाएंगे तो आत्मा शक्तिशाली नहीं बनेगी।

स्वामी समर्पणानंदगिरी जी महाराज, वाइस प्रेजीडेंट, प्रज्ञामिशन, गुरुकुलमपुरी

शरीर को भोजन और आत्मा को ध्यान जरूरी

ब्रह्माकुमारीज में जो आत्मा का ज्ञान दिया जाता है वह समाज के सभी वर्गों के लिए लाभदायक है। जो इस ज्ञान को जीवन में धारण करेंगे, उन्हें अवश्य ही इसका लाभ मिलेगा। समाज के अंदर इस ज्ञान की बहुत ही आवश्यकता है। सम्पूर्ण आरोग्य और सुखी जीवन के लिए भी आत्मा के ज्ञान की आवश्यकता है। आत्मा की उन्नति के लिए विवेक की आवश्यकता है। इसके लिए प्रतिदिन मुरली का अध्ययन और सत्संग करने की आवश्यकता है। जैसे शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है, वैसे ही आत्मा के लिए ध्यान की आवश्यकता होती है। आत्म अनुभूति और परमात्म अनुभूति के लिए सच्चा ज्ञान और मार्ग दर्शन की आवश्यकता होती है। समाज के विकास एवं मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए आत्मा का ज्ञान सभी के लिए आवश्यक है। इससे हमें मन को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

जैनी महाराज, बड़ौदा

ब्रह्माकुमारीज में आत्मा एवं परमात्मा का ज्ञान स्पष्ट तरीके से बताया जाता है। इस ज्ञान को आज जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। क्योंकि इसके अलावा दुनिया में मूल्यों की पुनर्स्थापना संभव नहीं है। स्वयं को आत्मा समझ सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव को याद करने से हमारे अंदर शक्तियों का विकास होता है एवं आत्मा वर्तमान समय की परिस्थितियों से सामना करने में सक्षम बनती है।

भीमसिंह तोमर, जिला खाद्य अधिकारी, नीमच, मप्र

परमात्मा की सत्य पहचान

खुद की आत्मा के रूप में तस्वीर साफ होने के बाद अब यह सवाल अहम हो जाता है कि आखिर परमात्मा कौन है? उसका रूप और रंग क्या है, वहां कहां रहता है। परमात्मा को अनेक धर्मों और मतों में लोग अपने-अपने रूपों में पूजते और मानते हैं। परन्तु परमात्मा का एक रूप है, एक आकार, एक स्थान तथा एक ही नाम है। जिसका नाम शिव है और हम सबका पिता है। अब स्वयं परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर हम मनुष्यात्माओं को स्वयं का सत्य परिचय दे रहे हैं। आइए हम जानते है परमात्मा की सत्य पहचान-

ब्रह्माकुमारीज़ व्यावहारिकता की बात करती है

देश में बहुत सारी संस्थाएं, सम्प्रदाय हैं कोई केवल आत्मा की बात करता है, कोई स्वर्ग की बात करता है, कोई मूल्यों की बात करता है, लेकिन ब्रह्माकुमारीज व्यावहारिकता की बात करती है। ब्रह्माकुमारीज राजयोग के द्वारा लोगों को परिवर्तन करने का पुनीत कार्य कर रही है। इस ज्ञान एवं शिक्षा से एक नई जागृति आएगी। यह संस्था लोगों को संस्कारित एवं मूल्यों को स्थापित करने का कार्य कर रही है एक दिन यह अपने उद्देश्य में जरूर सफल होगी।

प्रदीप जैन आदित्य, केंद्रीय राज्यमंत्री, ग्राम विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

मैं बचपन से ही स्वयं को आत्मा मानता था

अगर बचपन से ही लोगों को ये कॉन्सेप्ट क्लीयर करा दिया जाए कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं तो इससे लोगों में बहुत ही इम्प्रूवमेंट आएगी। रोटी, कपड़ा और मकान हमारे भाग्य पर निर्भर हो सकता है, लेकिन जीवन में वैल्यूज लाना अपने अधिकार में है। दैवीगुण में हिंसा शामिल नहीं होती है। वैज्ञानिक रीति से पुनर्जन्म को सत्य पाया गया है और इसका आधार हमारे वर्तमान में किए गए कर्म हैं। मैं बचपन से ही स्वयं को आत्मा स्वरूप में मानता था, क्योंकि मैं प्रतिदिन गीता अवश्य पढ़ता था। हम कम साधनों से भी सुखी और सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज में जुड़ने से व्यक्ति मूल्यों और संस्कारों की ओर बढ़ता है।

डॉ. पीके आनंद, संयुक्त सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, भारत सरकार

इस ज्ञान से जीवन में अनेक परिवर्तन आए

यहां पर दिया जाने वाला ज्ञान बहुत ही गहराई वाला है। राजयोग के अभ्यास से अनेक लोगों के जीवन में परिवर्तन आया है। राजयोग से हमें स्वयं का निरीक्षण करने का मौका मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ में दिया जाने वाला आत्मा-परमात्मा का ज्ञान वैज्ञानिक दृष्टिकोण का है। यहां के ज्ञान को जीवन में धारण करने के बाद मेरे जीवन में अनेक परिवर्तन आए। मैं चार महीने से नियमित राजयोग का अभ्यास कर रहा हूं एवं मुरली सुन रहा हूं। ये गॉडली यूनिवर्सिटी है, जहां हम सब स्टूडेंट हैं और ज्ञान आकर सीखते हैं। और उसका पालन करते हैं फिर उसे कार्य व्यवहार में लाते हैं। इससे हमारा चरित्र परिवर्तित होता है।

अमित मिस्त्री, फिल्म अभिनेता, मुंबई

नैतिक मूल्यों के लिए अच्छा कार्य

स्वच्छ मन से और ऊंचा उद्देश्य लेकर कोई भी कार्य आरंभ किया जाए तो वो बहुत आगे जाता है। ब्रह्माकुमारीज का जो विस्तार हुआ है वह तो कल्पना से परे है। जिस तरह से लोगों ने ब्रह्माकुमारीज के विचारों को, कार्य-कलापों को, मान्यताओं को अपनाया है, मैं समझता हूं कि नैतिक मूल्यों के विकास में यह अच्छा कदम है। शिक्षा के क्षेत्र में जो गैप है, उसकी पूर्ति करने का प्रयास ब्रह्माकुमारीज कर रही हैं। यह बहुत ही सराहनीय प्रयास है। जिस तन्मयता, लगन, प्रबंधन और गंभीरता से यहां के सारे कार्यकलाप हो रहे हैं, वह बहुत ही सराहनीय है। इसका केवल विस्तार ही नहीं हो रहा है, समाज के सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं, ब्रह्माकुमारी उसके बारे में विचारशील है।

आदित्य शास्त्री, कुलपति, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान

हमारी पहचान आत्मा से है

इस संस्था द्वारा दिए जा रहे ज्ञान से व्यक्ति ब्रॉड माइंडेड हो जाता है। जिससे व्यक्ति की सोच में परिवर्तन आता है। इस संस्था द्वारा जब से हमारे यहां प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ है तब से हमारी कम्पनी को बहुत फायदा मिल रहा है। इससे वर्कर्स के बीच आपसी सामंजस्य की भावना बढ़ी है और उनकी कार्यकुशलता भी बढ़ी है। जिसका फायदा हमारी कम्पनी को मिल रहा है। इससे व्यक्ति की सोच में बहुत ही परिवर्तन आया है और उनके सोचने का ढंग बदला है। हमारी पहचान शरीर से नहीं बल्कि आत्मा से है। हमारे अच्छे कर्मों के आधार पर ही हमारा अगला जन्म निश्चित होता है। यहां दिया जा रहा ज्ञान व्यक्ति और समाज के कल्याण के लिए है।

केके सिंह, ज्वाइंट जनरल मैनेजर, इलेक्ट्रिकल, इफको, ऑनला प्लांट, बरेली

...तो नई दुनिया आ सकती है

ब्रह्माकुमारीज की संस्कृति को पूरे विश्व में अपनाया जाए तो नई दुनिया आ सकती है। आज के जमाने में और पुराने जमाने में जमीन-आसमान का अंतर है। आज की नयी पीढ़ी भारतीय संस्कृति को भूलती जा रही है।

संजय देवतले, चंद्रपुर, मिनस्टर ऑफ कल्चर, महाराष्ट्र

यहां दिया जाने वाला ज्ञान तार्किक एवं वैज्ञानिक

ब्रह्माकुमारीज संस्थान मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। यहां दिया जाने वाला ज्ञान तार्किक एवं वैज्ञानिक है। इस संस्था में जो आत्मा-परमात्मा का ज्ञान दिया जाता है वह बहुत ही गहराई वाला एवं प्रमाणिक है। हम इस जगत के कल्याण के लिए तभी योगदान दे सकते हैं जब हम आत्मिक स्थिति में स्थित रहेंगे। इस ज्ञान से हमें स्वयं को समझने का मौका मिलता है। परमात्मा से संबंध स्थापित करने पर हमारे अंदर आत्मिक शक्तियों का विकास होता है। अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा से संबंध स्थापित करने से मिलन की जो सुखद अनुभूति होती है उसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान आत्मा की स्पष्ट व्याख्या के साथ परमात्मा के संपूर्ण स्वरूप एवं 32 गुणों का वर्णन, परमात्मा की सत्य पहचान कराता है।

डॉ. अजय शुक्ला, विहेवियर साइंटिस्ट, भोपाल, मप्र

आज प्रत्येक मनुष्य यही कहता है कि ईश्वर का ध्यान करते समय उसका मन भटकता रहता है या एकाग्र नहीं हो पाता है। इस तरह की शिकायत मनुष्य के साथ योग लगाने की बात में कभी नहीं होती है। कोई पत्नी यह शिकायत नहीं करेगी कि जब वह अपने पति को याद करती है तब उसका मन भटकता रहता है। कोई भी बच्चा यह कभी नहीं कहता है कि वह अपने पिता में अपना मन एकाग्र नहीं कर सकता है। तब फिर यह शिकायत परमात्मा के लिए क्यों है? एक तरफ तो परमात्मा को माता-पिता कहकर याद किया जाता है और उनके साथ सर्व सम्बन्धों का भी वर्णन किया जाता है -

त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव,
त्वमेव सर्वम मम देव-देव।।

यह परमात्मा की ही महिमा में तो गाया जाता है, लेकिन दूसरी तरफ हम यह भी कहते हैं कि ईश्वर में हमारा मन नहीं लगता है। इसका मूल कारण यही है कि परमात्मा के साथ हमें अपने सम्बन्धों की पूरी अनुभूति नहीं है या यों कहें कि हमें परमात्मा के सम्बन्ध में कोई जानकारी ही नहीं है।

हम देखते हैं कि कोई परमात्मा को नाम-रूप से न्यारा मानते हैं तो कोई इस अभिप्राय के हैं कि सभी ईश्वर के नाम-रूप हैं। कोई श्रीकृष्ण, श्रीराम, महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह को परमात्मा का अवतार मानते हैं तो कोई यह स्वीकार ही नहीं करना चाहते हैं कि परमात्मा का कभी अवतार भी होता है। कोई आत्मा को ही परमात्मा मानते हैं तो कोई आत्मा को परमात्मा का अंश मानते हैं। कोई तो जगत को मिथ्या और ब्रह्म को सत्य मानते हैं तो कोई जगत के अंदर ही प्रकृति को ही ईश्वर का स्वरूप समझते हैं।

कोई स्वयं को ईश्वर के नीचे या दास सिद्ध करते हैं तो कोई स्वयं को शिवोहम या भगवान कहलाकर खुद की पूजा करवाते हैं। कोई परमात्मा को हृदय में मानते हैं तो कोई कण-कण में व्यापक समझते हैं और कोई उसका स्थान सातवां आसमान बताते हैं। अब आखिर परमात्मा कौन है, कैसा है और कहां है?

परमात्मा को इन चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता है

उपरोक्त अनेक मंतव्यों का कारण है कि परमात्मा कोई स्थूल वस्तु तो है नहीं जिसे चर्म-चक्षुओं से देखा जा सके या स्थूल इंद्रियों से अनुभव किया जा सके। चैतन्य परमात्मा का वास्तविक स्वरूप तो बुद्धि के द्वारा ही जाना अथवा अनुभव किया जा सकता है।

प्राचीन ऋषि-मुनि परमात्मा की हर प्रकार से खोज करने के पश्चात् इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि ईश्वर को पहचानना मनुष्य के वश की बात नहीं है। ईश्वर के बारे में ने:ति-ने:ति कहकर छोड़ दिया। परमात्मा की अनुभूति तो सिर्फ आत्म अनुभूति से ही संभव है।

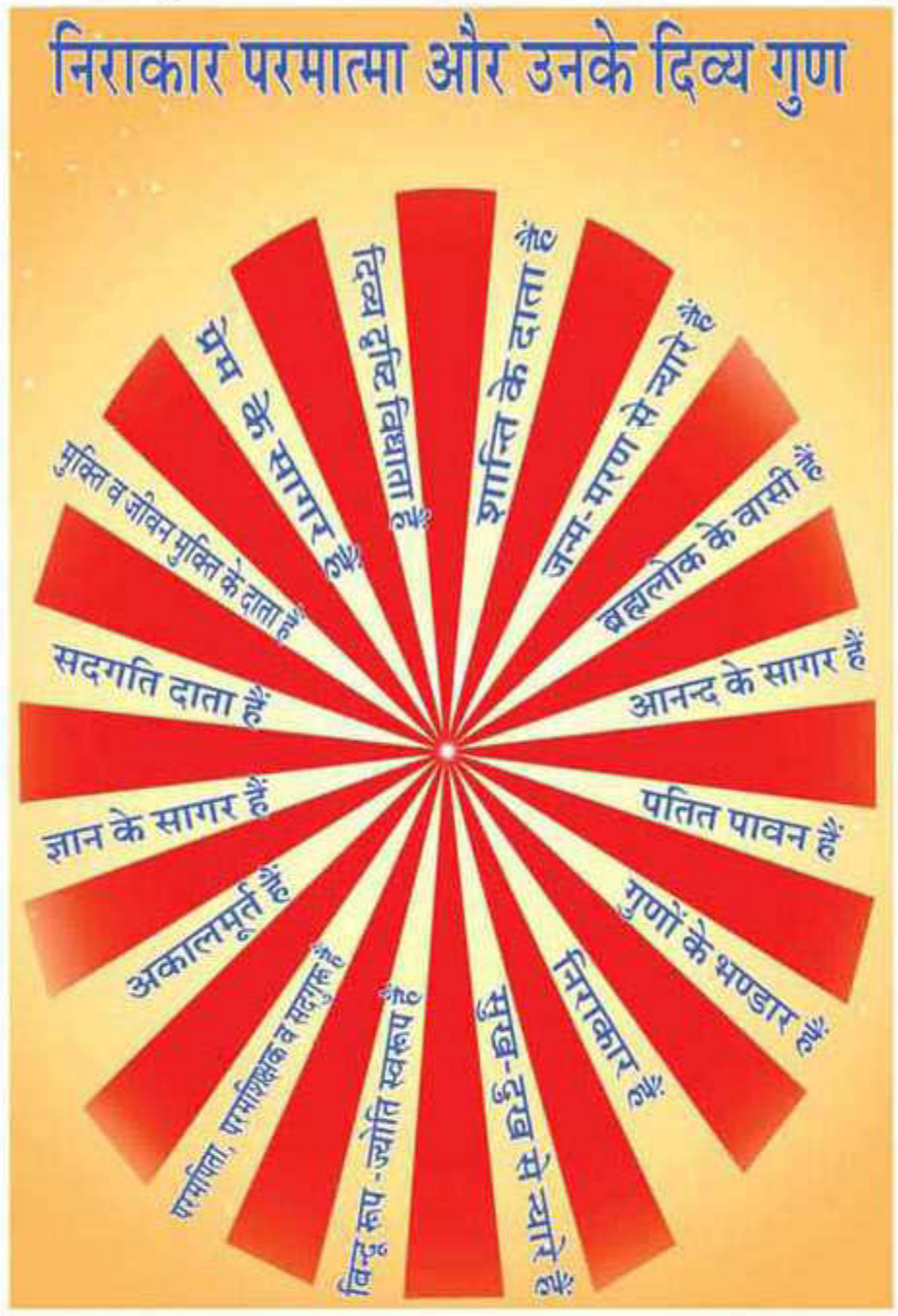

हम सब एक परमात्मा की संतान

आज मनुष्य बाह्य साधनों में मानसिक सुख-शांति ढूंढ रहा है और आत्मिक शांति के लिए तरस रहा है, लेकिन उसे यह मालूम ही नहीं है शांति तो हमारे अंदर ही है। जब तक मनुष्य स्व के स्वरूप और अपने जन्म का मर्म नहीं समझेगा तब तक उसको आत्मिक शांति प्राप्त नहीं हो सकती है। हम सब एक हैं और एक परमात्मा की संतान हैं।

श्रीमन गुरूसिंग धामा स्वामी जी, करनजी मठ, बेलगाम

परमात्मा की सत्य पहचान के पांच आधार

अब यह तो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि परमात्मा एक है और वह सत्य है। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा का परिचय भी केवल एक ही हो सकता है। ईश्वर की सत्य पहचान क्या होगी? जिस प्रकार किसी डॉक्टर की पहचान उसके ज्ञान, अनुभव, गुणों तथा कर्तव्यों के आधार पर ही की जा सकती है, उसी प्रकार परमात्मा की भी सत्य पहचान निम्न पांच बातों के आधार पर की जा सकती है -

- **जो सर्वमान्य हो:** परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वमान्य हो, यानी जिसे सभी धर्मों की आत्माएं सहज ही स्वीकार करें, क्योंकि वह सर्व धर्मों की आत्माओं का परमपिता है। उसे अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे कि परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉड, नूर इत्यादि परंतु वह है तो एक ही।
- **जो सर्वोच्च हो:** परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम या परम हो यानी उसके ऊपर कोई हस्ती न हो। परमात्मा का कोई माता-पिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है, बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परम शिक्षक, परम सतगुरु और परम रक्षक हैं। इसलिए उसकी महिमा में गाया जाता है - ऊंचा तेरा नाम, ऊंचा तेरा धाम, ऊंचा तेरा हर काम, ऊंचे से ऊंचा भगवान। तो जिसका नाम, धाम, गुण और कर्तव्य सबसे ऊंचा है वही परमात्मा है।
- **जो सबसे न्यारा हो:** परमात्मा उसे कहेंगे जो सबसे न्यारा हो। परमात्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य, सुख-दुःख के चक्करों में नहीं आते हैं। परमात्मा इस प्रकृति की परिवर्तन-क्रिया अर्थात् सतो-रजो-तमो से भी न्यारा है। वह सर्व प्राकृतिक बंधनों से मुक्त है। इसलिए वह सर्व से न्यारा और सर्व का प्यारा माना गया है। ईश्वर से ऊंचा तो कोई नहीं है परंतु उसके समान भी कोई नहीं है।
- **जो सर्वज्ञ हो:** परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो अर्थात् वह सबकुछ जानता हो। किसी भी संदर्भ में जब कोई बात व्यक्ति की समझ में नहीं आती है तो ईश्वर को याद कर अवश्य कहेगा, भगवान जाने या अल्लाह जाने अर्थात् परमात्मा से कोई भी बात अनभिज्ञ नहीं है क्योंकि वह सर्वज्ञ है।
- **जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हो:** परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों और शक्तियों का भण्डार हो। परमात्मा कभी भी किसी से लेता नहीं है, परंतु सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को देता ही रहता है। उसी के लिए गाया गया है, देने वाला जब भी देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है।
- हम किसी भी साकार देहधारी व्यक्ति को परमात्मा नहीं कह सकते हैं, क्योंकि साकार व्यक्ति कभी भी सर्वमान्य नहीं हो सकता जो सभी धर्मों की आत्माओं को स्वीकृत हो। साकार देहधारी के माता-पिता, शिक्षक, गुरु, रक्षक अवश्य ही होते हैं इसलिए उसे सर्वोच्च भी नहीं कह सकते हैं। साकार व्यक्ति सबसे न्यारा भी नहीं हो सकता है क्योंकि साकार के साथ जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण और सुख-दुःख आदि भी संलग्न हैं। साकार सर्व का ज्ञाता तथा दाता भी नहीं बन सकता है। वह तो और ही ईश्वर से ज्ञान, सुख, शांति और शक्ति मांगता ही रहता है। इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि कोई भी साकारी देहधारी व्यक्ति परमात्मा नहीं हो सकता है।

मैंने यहां मानसिक शांति का अनुभव किया

मैं अपने आप को खुशनसीब समझता हूं कि मुझे ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने माऊण्ट आबू आकर यहां मिलने वाली आध्यात्मिक, मानसिक शांति का अनुभव किया। हमें परमात्मा के प्रति समर्पित होना चाहिए, क्योंकि परमात्मा सभी गुणों और शक्तियों के सागर हैं। जो सुख-दुख, विपत्ति में हमारे साथ रहते है एवं हमें सब दुखों से तारते हैं। माउण्ट आबू से संचालित ब्रह्माकुमारीज संस्था विश्व में शांति, भाईचारा, एकता का संदेश दे रही है। यहां जितने भी लोग मिले उन सभी ने संस्था के मानवता के उत्थान व आपसी भाईचारे के प्रति नि:स्वार्थ भाव से किए जा रहे कार्यों की सराहना की। मैं इस संस्था के सभी अनुयायियों का धन्यवाद करता हूं जो नि:स्वार्थ भाव से विश्वशांति के लिए प्रयास कर रहे हैं।

आनंद कौशिक, विधायक, फरीदाबाद, हरियाणा

यहां सब अचंभित करने वाला

भगवान की कृपा होती है तब व्यक्ति को ऐसे सुंदर स्थल पर लाता है। यहां के लोग, परिवेश, वातावरण सबकुछ अचंभित करने वाला है। लगता ही नहीं है कि हम इस पृथ्वी पर हैं। दुनिया में यह संस्था नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने का सराहनीय कार्य कर रही है।

नितिन चंद्रा, आईएएस, विशेष सचिव जनरल एडमिनिस्ट्रेशन, ओडिशा सरकार, भुवनेश्वर

इसमें सभी को आहुति डालनी चाहिए

पूरे विश्व में महिलाओं द्वारा संचालित एकमात्र आध्यात्मिक संस्था ब्रह्माकुमारीज ने विश्व में शांति एवं सद्भाव की स्थापना का जो बीड़ा उठाया है, उसे एक महायज्ञ मानते हुए जाति, धर्म, समुदाय, राजनीतिक विचारधारा की संकीर्णता से ऊपर उठकर सभी को इसमें आहुति डालनी चाहिए। जब हम परमात्मा की याद में रहकर कोई कार्य करते हैं तो उसमें अवश्य ही सफलता मिलती है।

राव नरेंद्र सिंह, स्वास्थ्य मंत्री, हरियाणा सरकार

माउण्ट आबू धरती का स्वर्ग है

ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय को देखने से लगता है कि यह धरती का स्वर्ग है। यहां की व्यवस्था, वातावरण सब पवित्र है। यहां के भाई-बहनों में समर्पणता की भावना है। अपने विचार में, अपने कार्यकलाप में अगर इस भावना को उतारा जाए तो अनेकों के जीवन में परिवर्तन आ जाएगा। स्वर्ग और नर्क इसी धरती पर है। इसका ज्वलंत उदाहरण ब्रह्माकुमारीज संस्था है। अगर सही रूप में परिवर्तन करना है, आत्मशुद्धि करना है तो इसका एकमात्र रास्ता मेडिटेशन है।

जयंती लाल जैन, महाप्रबंधक, हसनगर चीनी मिल्स लिमिटेड, बिहार

यहां आत्मा के बारे में गहराई से दिया जाता है ज्ञान

ब्रह्माकुमारीज संस्था के अलावा कोई संस्था आत्मा के बारे में गहराई से ज्ञान नहीं देती है। दूसरी संस्थाएं शरीर का ज्ञान देती है। स्व परिवर्तन के बारे में कोई भी संस्था नहीं बताती है कि हमें शांति से कैसे रहना चाहिए, सुख से कैसे रहना चाहिए। स्व परिवर्तन होने से समाज पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। आत्मा के ज्ञान होने से हमारे अंदर आत्मिक शांति आती है। शांति, सुख आत्मा के गुण हैं इसलिए हमें आत्मा के बारे में जानना चाहिए। प्रेम अनुभव करने की चीज है इसे आत्मा ही अनुभव करती है। तो हर कर्म के लिए हर जगह पर बौद्धिक ज्ञान आत्मा के बिना नहीं हो सकता है। जब हम शांति का अनुभव करते हैं तो सबसे पहले हमें मिलती है फिर हमारे द्वारा दूसरों को मिलती है। आत्मा की जानकारी होने के कारण हमारा कोई परचिंतन नहीं चलता है। किसी के प्रति नकारात्मक विचार नहीं आते हैं। आत्मा का ज्ञान होने से हम इन सब चीजों से मुक्त हो गए। इसका एक फायदा यह होता है कि हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इससे हमारे धन की भी बचत हो जाती है, क्योंकि स्वास्थ्य पर होने वाला धन हमारा बच जाता है। आत्मा शब्द का हम नाम तभी लेते हैं जब हमारे शरीर से आत्मा निकल जाती है। तब हम कहते हैं कि भगवान इनकी आत्मा को शांति दे। मनुष्य जब कर्म करता है तो हम यह नहीं कहते हैं कि पापी शरीर है, गुणी शरीर है ये सब आत्मा के प्रति कहा जाता है न कि शरीर के प्रति। इन सारी बातों से यह स्पष्ट होता है कि आत्मा ही चैतन्य है, आत्मा ही शक्ति है, इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आत्मा ही पार्ट बजाती है शरीर नहीं। आत्मा एक शरीर से निकलकर दूसरे शरीर में जाती है यह बात हमारे धर्म ग्रंथों में लिखी हुई है। अगर हम जीवन में सच्ची सुख-शांति, प्रेम, आनंद को बनाए रखना चाहते हैं तो आत्मा का ज्ञान आवश्यक है।

अशोक मणीतरवे, इंडियन एकाउण्ट्स एण्ड ऑडिट डिपार्टमेंट, डिवीजनल एकाउण्ट्स ऑफीसर, मुम्बई

हमारी कंपनी में टीम वर्क की भावना बढ़ी है

ब्रह्माकुमारीज द्वारा दिए जा रहे ज्ञान से गुस्सा नियंत्रित करने में और संयम बरतने में मदद मिलती है। जब से मैंने यहां से प्रशिक्षण लिया है, तब से हमारे व्यवहार में परिवर्तन आया है। मैं पहले की अपेक्षा और अधिक अच्छे ढंग से लोगों से व्यवहार कर पाता हूं। आप कुछ भी करो लेकिन दो मिनट साइलेंस में बैठने से परिस्थिति और परेशानियां स्वत: ही समाप्त हो जाती है। हमारे अंदर जो कुछ चल रहा है वह आत्मा ही चला रही है। हमारे प्लांट से चपरासी से लेकर अधिकारी तक के लोग यहां भेजे जाते हैं। जब से हमारी कंपनी में यह ट्रेनिंग प्रोग्राम चल रहा है तब से अप्रत्यक्ष रूप से वहां के कल्चर में परिवर्तन आया है और लोगों में टीम वर्क की भावना बढ़ी है। इफको के पांचों जोन के प्रतिनिधि यहां आते हैं उसे कंपनी यहां भेजती है। कंपनी के अंदर एक फैमली कल्चर का वातावरण बन गया है। वहां किसी को यह महसूस ही नहीं होता है कि कौन यहां नया है और कौन पुराना है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा दी जा रही वैल्यूज की शिक्षा से हमारे कंपनी को और स्वयं को दोनों को ही फायदा मिलता है। आदमी कैसा भी हो वह यहां आकर ट्रेनिंग लेता है तो उसके जीवन में सकारात्मक बदलाव अवश्य ही आता है। हमारे यहां तो लोगों को माउण्ट आबू आने के लिए क्यू लगी रहती है और लोग धैर्यता से यहां आने की प्रतीक्षा करते हैं।

जीके गुप्ता, ज्वाइंट जनरल मैनेजर, सिस्टम, इफको, फुलपुर प्लांट, इलाहाबाद

पीस ऑफ माइंड चैनल ईश्वरीय उपहार

'पीस ऑफ माइंड' दुनिया का एकमात्र ऐसा चैनल है, जिसमें विज्ञापन नहीं है। सभी को ईश्वरीय निमंत्रण और परमात्मा का सत्य परिचय मिले। इसके लिए विज्ञान के साधनों का अहम योगदान है। जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित एवं प्रसारित होता है। आज इस चैनल से जुड़कर लाखों लोगों ने अपने जीवन को नई दिशा दी है। कई लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं। आधुनिक युग में जहां चैनलों में अश्लीलता, फूहड़ता परोसी जा रही है वहीं पीस ऑफ माइंड चैनल लोगों के जीवन में आशा की एक नई किरण बनकर सामने आया है। इस चैनल के द्वारा भारतवर्ष में सकारात्मक चिंतन, मेडिटेशन एवं वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनों के माध्यम से लोगों के आम जीवन से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। जिसे वीडियोकॉन, रिलायंस डीटीएच के अलावा केबल पर देश भर में कहीं भी देखा जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें मो... 8140211111, 7891109999, ईमेल: karunabk@gmail.com

ईश्वरीय संदेश

आपको यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि स्वयं परमपिता शिव परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। परमात्मा पिछले 77 वर्षों से नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। विषय विकारों से ग्रसित, इस पतित कलियुगी दुनिया को पावन बनाने परमात्मा आते हैं। परमात्मा साकार मनुष्य तन का आधार लेकर हम आत्माओं को स्वयं की सत्य पहचान देते हैं। परमात्मा सच्चा गीता ज्ञान देकर राह से भटकी हुई आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति की राह बताते हैं। परमपिता परमात्मा ने बताया कि तुम मनुष्यात्माओं का वास्तविक घर परमधाम, निर्वाणधाम, ब्रह्मलोक है। तुम्हारा वास्तविक घर वहीं है। इस सृष्टि पर तुम आत्मायें वहीं से ड्रामानुसार पार्ट बजाने आते हो। अब मैं तुम्हें कल्प पहले की भांति वापिस ले जाना आया हूं। इसलिए इस अज्ञान निद्रा से जागो और 21 जन्मों के राज्य भाग्य का वर्सा प्राप्त कर अपना श्रेष्ठ भाग्य बनाओ। गीता में दिए हुए अपने वचन के अनुसार मैं इस धरा पर अवतरित हो चुका हूं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता:

प्रकाशक: ब्रह्माकुमार करुणा द्वारा मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन विभाग ब्रह्माकुमारीज़ के लिए प्रकाशित एवं डीबी प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: मोबाइल 9413384884, 9414156615, 9414193999 फोन: 02974-228230, Email: bkmediaprhq@gmail.com